सांध्य दैनिक

4PM

www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_Sanjay YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्षः 7 ● अंकः 339 ● पृष्ठः 8 ● लखनऊ, शनिवार, 15 जनवरी, 2022

मूल्य ₹ 3/-

मैं असफल नहीं हुआ हूं। मैंने बस 10,000 ऐसे तरीके खोज लिए हैं जो काम नहीं करते हैं।

-थॉमस ए. एडीसन

जिद...सच की

जो किसानों के साथ खड़ा है... 8 | यूपी चुनावः पिछड़े वर्ग के नेताओं... 3 | यूपी से पंजाब तक कांग्रेस में... 7

गोरखपुर शहर से योगी और सिराथू से केशव ठोकेंगे ताल

नोएडा से पंकज सिंह और मथुरा से श्रीकांत शर्मा को टिकट

» भाजपा ने जारी की पहले और दूसरे चरण के प्रत्याशियों की लिस्ट

» पहले चरण का मतदान 10 फरवरी और दूसरे चरण का मतदान 14 फरवरी को

» तीन सौ से अधिक सीटों से जीतने का किया दावा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। विधान सभा चुनाव की तारीखों के ऐलान के बाद प्रदेश में सियासी हलचल चरम पर पहुंच चुकी है। सभी दल प्रत्याशियों का ऐलान कर रहे हैं। इसी कड़ी में भाजपा ने आज पहले और दूसरे चरण के चुनाव के लिए अपने उम्मीदवारों की लिस्ट जारी कर दी। भाजपा ने पहले चरण के 58 में से 57 तथा दूसरे चरण की 55 में से 48 सीटों पर प्रत्याशी घोषित किए है। दोनों चरणों के लिए कुल 105 सीटों पर प्रत्याशियों के नामों का ऐलान किया गया है। इसके अलावा सीएम योगी आदित्यनाथ गोरखपुर शहर और डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य प्रयागराज के सिराथू से चुनाव लड़ेंगे।

भाजपा ने यूपी विधान सभा चुनाव के मैदान में पहले तथा दूसरे चरण के चुनाव में उतरने वाले प्रत्याशियों के नाम आज जारी किए। वहीं सीएम योगी आदित्यनाथ तथा डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य को भी चुनाव मैदान में उतारा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को गोरखपुर शहर (322) से भाजपा प्रत्याशी प्रत्याशी घोषित किया गया है जबकि डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य को प्रयागराज की सिराथू

विधान सभा सीट (251) से प्रत्याशी घोषित किया गया है। हालांकि इसके पहले सीएम योगी आदित्यनाथ के अयोध्या से उतारने की चर्चा गर्म थी। गाजियाबाद से अतुल गर्ग, नोएडा से राजनाथ सिंह के बेटे पंकज सिंह, मीरापुर से प्रशांत गुर्जर, कैराना से मृगांका सिंह, मथुरा से श्रीकांत शर्मा, अतरौली से संदीप सिंह, खतौली से विक्रम सिंह सैनी व थाना भवन से सुरेश राणा, को टिकट दिया गया है। यूपी में पहले चरण का मतदान 10 फरवरी को और दूसरे चरण का मतदान 14 फरवरी को है।

मुख्य बिंदु

- दोनों चरणों की लिस्ट में 63 विधायकों को दोबारा टिकट
- 20 सीटों पर उम्मीदवार बदले गये
- 21 नये प्रत्याशियों को टिकट

ये है सीटों का समीकरण

44 ओबीसी 19 एससी 10 महिलाएं

प्रचंड बहुमत से बनाएंगे सरकारः धर्मेंद्र प्रधान

भाजपा के यूपी प्रभारी धर्मेंद्र प्रधान ने दावा किया कि 2017 की तरह 2022 में भी भाजपा एक बार फिर प्रचंड बहुमत से सरकार बनाने जा रही है। उन्होंने कहा कि 2017 में जनता ने भाजपा को प्रचंड बहुमत का जनादेश दिया था। योगी सरकार ने पिछड़े पांच साल में, दंगाइयों व भ्रष्टाचारियों पर रोक लगाई है। प्रदेश में इंफ्रांस्ट्रक्चर का जाल बिछाया जा रहा है। जेवर एयरपोर्ट बन रहा है। एक्सप्रेस वे बन रहे हैं। यह भाजपा सरकार की नीतियों का ही प्रभाव है कि यूपी आज बीमारू राज्य नहीं है बल्कि विकास का सिरमौर बनने की तरफ बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि हमें विश्वास है कि यूपी की जनता हमें फिर 300 से ज्यादा सीटों से जिताएगी।

प्रत्याशियों की सूची पेज आठ पर।

जनता के भेजने से पहले भाजपा ने योगी को भेज दिया घरः अखिलेश

» सपा करती है सकारात्मक राजनीति, जल्द जारी करेंगे घोषणापत्र

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने एक बार फिर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पर जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि वे कभी कहते थे अयोध्या से लड़ेंगे, कभी कहते थे मथुरा से लड़ेंगे। कभी कहते थे प्रयागराज से लड़ेंगे। मुझे खुशी है जनता के भेजने के पहले भाजपा ने उनको घर भेज दिया। हालांकि वे कल से गोरखपुर में है। अब गोरखपुर से आने की जरूरत नहीं है। उनको बहुत-बहुत बधाई। सपा के गठबंधन के साथ जनता है। चुनाव में भाजपा साफ होने जा रही है।

एक सवाल के जवाब में उन्होंने कहा कि अब सपा, भाजपा के किसी विधायक और मंत्री को नहीं लेगी। वे जिसका टिकट काटना चाहे काट सकते हैं। सपा सकारात्मक राजनीति पर विश्वास करती है। सपा का घोषणा पत्र और प्रत्याशियों की लिस्ट जल्द जारी कर दी जाएगी। महिला पेंशन पर शानदार स्कीम लाएंगे। गोरखपुर में सपा सभी सीटों पर जीतेगी। गोरखपुर की जनता उनको सबक सिखाएगी। उन्होंने बिजली महंगी कर दी। सपा सरकार बनने पर तीन सौ यूनिट फ्री बिजली देंगे। उन्होंने सभी नेताओं और कार्यकर्ता से अपील करते हुए कहा कि वे पूरी ईमानदारी से कोरोना प्रोटोकॉल का पालन करें। वे अपने घर और क्षेत्र में रहें। कोरोना प्रोटोकाल की आड़ में भाजपा जहां-जहां सपा का वोट है वहां मतदान के दिन एंबुलेंस व पुलिस को लगा सकती है।

सपा गठबंधन की बनेगी सरकार भाजपा का होगा सफाया

अपने जन्मदिन पर मायावती ने जारी की प्रत्याशियों की सूची

» पहले चरण के चुनाव के लिए 58 में से 53 सीटों पर नामों का किया ऐलान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। बसपा प्रमुख मायावती ने अपने जन्मदिन पर सत्ता में वापसी का भरोसा जताने के साथ पहले चरण के मतदान के लिए 58 में से बसपा के 53 प्रत्याशियों की सूची जारी की। पांच सीट के प्रत्याशियों की सूची बाद में जारी की जाएगी।

बसपा प्रमुख मायावती ने कहा कि बीएसपी को सत्ता में वापसी की पूरी उम्मीद है। पिछले कामकाज के आधार पर जनता हमें जिताएगी, विरोधी हमें सत्ता में आने से रोकने के लिए हर हथकंडे अपना रहे हैं लेकिन जनता उनके इन हथकंडों को समझ चुकी है। उन्होंने कहा कि बसपा ने ही

प्रदेश में दलितों, पिछड़ों तथा वंचितों के लिए काम किया है। हम हर वर्ग की भलाई के लिए सरकार चलाएंगे। बीएसपी दलितों के मुद्दे पर गंभीर है। 2007 की तरह फिर सत्ता में वापस आएंगे। इस दौरान मायावती ने कहा कि सतीश चंद्र मिश्रा के बेटे कपिल के साथ आकाश आनंद भी पार्टी के लिए काफी मेहनत कर रहे हैं। डॉक्टर भीमराव अंबेडकर, मान्यवर कांशीराम के सिद्धांतों पर चलकर कमजोर, दलित, लाचार, असहाय लोगों की मदद की है और कर रहे हैं।

प्रत्याशियों की सूची पेज आठ पर।

अनुप्रिया पटेल और संजय निषाद ने बढ़ाई भाजपा की मुश्किलें

» बीजेपी में मची भगदड़ के बीच दोनों सहयोगी ढूढ़ रहे आपदा में अवसर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। विधानसभा चुनाव से ठीक पहले भाजपा में मचीभगदड़ पार्टी के सहयोगियों को बड़ा अवसर मुहैया करा दिया है। राज्य में भाजपा के दोनों सहयोगी दो-दो दर्जन से ज्यादा सीटों पर अड़ गए हैं। फिलहाल तीन दौर की बैठक के बाद सहयोगियों से हर कीमत पर साधने में जुटी भाजपा अपना दल को 18 तो निषाद पार्टी को 14 सीटें देने के लिए तैयार है। अपना दल के नेताओं के साथ भाजपा की तीन दौर की बातचीत हुई है।

भाजपा की ओर से बातचीत की अगुवाई प्रदेश के चुनाव प्रभारी धर्मेंद्र प्रधान और संगठन मंत्री सुनील बंसल कर रहे हैं। एक बैठक डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य और स्वतंत्र देव की उपस्थिति में हुई है। सूत्रों का कहना है कि गैर यादव ओबीसी नेताओं के एक-एक कर पार्टी छोड़ने से भाजपा के पास दोनों सहयोगियों के मनाने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। पार्टी के दोनों सहयोगी गैर यादव ओबीसी जातियों का ही प्रतिनिधित्व करते हैं। ऐसे में इन सहयोगियों को साधे रखने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। अगर इन सहयोगियों में से एक ने भी साथ छोड़ा तो विपक्ष के भाजपा के गैरयादव ओबीसी विरोधी होने के आरोपों को बल मिलेगा। पहले दौर में अपना दल ने तीन दर्जन सीटें मांगी थी। बीते चुनाव में उसे एक दर्जन सीटें मिलीं थी। तीसरे दौर की बातचीत में अपना दल दो दर्जन सीटों पर अड़ गया। भाजपा सूत्रों का कहना है कि निषाद पार्टी बड़ी समस्या नहीं है। पार्टी के पास अपना चुनाव चिन्ह नहीं है। ऐसे में ज्यादा संभावना है कि निषाद पार्टी के उम्मीदवार भाजपा के निशान पर चुनाव लड़ें। वैसे भी पार्टी की योजना निषाद पार्टी की ज्यादातर सीटों पर अपना उम्मीदवार देने की है। इस विधानसभा चुनाव में अपना दल की अध्यक्ष और केंद्रीय मंत्री अनुप्रिया पटेल की भूमिका बढ़ेगी। पार्टी का मानना है कि उनका कुर्मी बिरादरी के इतर दूसरे गैरयादव ओबीसी जातियों में भी अच्छा प्रभाव है।

पुष्कर सिंह धामी का ऐलान

खटीमा से ही लड़ूंगा चुनाव

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

देहरादून। उत्तराखंड विधानसभा चुनाव को लेकर राज्य के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने हल्द्वानी दौरे पर बड़ा बयान दिया है। उन्होंने कहा कि वह ऊधमसिंह नगर की खटीमा विधानसभा सीट से ही मैदान में उतरेंगे। इसके साथ धामी ने विपक्ष से पूछा है कि वह अपना चेहरा बताएं। वहीं उन्होंने उत्तराखंड कांग्रेस कैंपेन कमेटी के चेयरमैन और पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत पर निशाना साधते हुए कहा कि उनका 2017 में दो सीटों पर चुनाव लड़ने का अनुभव धरा रह गया था। लिहाजा कांग्रेस मुझे अनुभवहीन समझने की भूल ना करे।

यही नहीं, सीएम पुष्कर सिंह धामी इन दिनों चुनाव मूड में दिख रहे है। वहीं, उन्होंने विपक्ष से सवाल पूछा कि बीजेपी के पास उनके साथ ही पीएम नरेंद्र मोदी का चेहरा है, लेकिन विपक्ष बताए विधानसभा चुनाव में उनका चेहरा कौन है। वह किसके नेतृत्व में चुनाव लड़ने जा रहे हैं। वैसे खटीमा से धामी के खिलाफ कांग्रेस के कार्यकारी प्रदेश अध्यक्ष भुवन कापड़ी का मैदान में उतरना लगभग तय है। जबकि यहां से आम आदमी पार्टी के पूर्व अध्यक्ष एसएस कलेर चुनावी मैदान में उतरने का ऐलान कर चुके हैं, लेकिन पार्टी ने किसी के नाम की घोषणा नहीं की है। सीएम पुष्कर सिंह धामी लगातार तीसरी बार खटीमा विधानसभा सीट से चुनावी मैदान में उतरने की घोषणा की है। वह इससे पहले 2012 और 2017 में यहां से चुनाव जीत चुके हैं।

अपने दम पर लड़ेंगे चुनाव: चंद्रशेखर

» पुलिस ने कार्यालय पर नहीं दी पीसी की अनुमति, चस्पा किया नोटिस

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। आजाद समाज पार्टी के मुखिया चंद्रशेखर ने कहा कि यूपी चुनाव हम अपने दम पर लड़ेंगे। उन्होंने कहा कि एक महीने 10 दिन से मेरी लगातार विपक्ष के नेता अखिलेश यादव से बात हो रही है। मगर किसी कारणवश बात नहीं बनी। ऐसे में हम उनसे गठबंधन नहीं करेंगे। उन्होंने कहा कि यूपी में भाजपा को हराना हमारा लक्ष्य है, हम भाजपा को सत्ता में नही आने देंगे। साथ ही उन्होंने कहा कि जो हमेशा कहते थे उनको भी दलितों की जरुरत नहीं है।

हमने तय किया है कि अभी किसी से गठबंधन नहीं करेंगे। बीजेपी के खिलाफ हमने लाठियां खाई हैं। हम अपने दम पर लड़ेंगे। पहली कोशिश यही रहेगी कि जो विपक्ष बिखरा है, उसे एक किया जाए। अगर सरकार बीजेपी की आती है तो दलितों और पिछड़ों को पांच साल झेलना पड़ेगा। उन्होंने कहा कि दलितों के लिए 25 प्रतिशत आरक्षण की मांग हमने की है। विपक्षी पार्टियां दलितों के मुद्दे पर बात नहीं कर रही है। इसलिए दलित अपनी लड़ाई खुद लड़ेंगे। हम अपने दम पर लड़ेंगे। पहली कोशिश यही रहेगी कि जो विपक्ष बिखरा है उसे एक किया जाए। इससे पहले आजाद समाज पार्टी के मुखिया चंद्रशेखर की प्रेस कॉन्फ्रेंस पुलिस ने अनुमति नहीं दी थी। कहा गया है कि चुनिंदा कार्यकर्ताओं के साथ ही वे कॉन्फ्रेंस कर सकते हैं।

बड़बोलापन बनेगा स्वामी प्रसाद की मुसीबत: सतीश चंद्र

» बसपा ने पूर्व कैबिनेट मंत्री पर कसा तंज

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। स्वामी प्रसाद मौर्य ने भले ही भाजपा का दामन छोड़कर समाजवादी पार्टी ज्वाइन की है लेकिन इससे बसपा की उम्मीदों पर भी कुठाराघात हुआ है। स्वामी प्रसाद मौर्य भाजपा से पहले बसपा में ही थे। बसपा ने अब स्वामी प्रसाद का पुराना वीडियो जारी कर बताया है कि वह किस तरह से सपा को कोसते थे। बसपा के महासचिव सतीश चंद्र मिश्रा ने खुद वीडियो को सोशल मीडिया साइट कू ऐप पर शेयर किया है। दरअसल, पूर्व मंत्री स्वामी प्रसाद मौर्य ने सपा की सदस्यता लेने के साथ बसपा की राष्ट्रीय अध्यक्ष पर भी निशाना साधा तो बसपा ने भी पलटवार करने में देरी नहीं की।

पार्टी के महासचिव और सांसद सतीश चंद्र मिश्र ने पूर्व मंत्री मंत्री मौर्य के बड़बोलेपन को ही आधार बनाया है। मिश्र ने मौर्य की ओर से पूर्व में दिए गए बयान का वीडियो इंटरनेट मीडिया पर अपलोड करते हुए लिखा है कि अपने पुराने वक्तव्य को ही याद कीजिए, समाज को बांटने वाली भाजपा व अपराधियों को संरक्षण देने वाली समाजवादी पार्टी में अब जाकर मौर्य जी आप समाज को क्या संदेश दे रहे हैं? समाजवादी पार्टी को गाली देने वाले आज खुद समाजवादी की गोद में जाकर बैठ गए हैं। वीडियो में पूर्व मंत्री ने सपा पर महिलाओं का उत्पीड़न करने का आरोप लगाते हुए सपा को गुंडों व अपराधियों की पार्टी करार दिया है।

भूटान के काउंसलर बनने जा रहे हैं स्वामी प्रसाद मौर्या: राजू श्रीवास्तव

» कामेडियन ने सपा सहित दारा सिंह चौहान पर साधा निशाना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। प्रसिद्ध हास्य कलाकार और उत्तर प्रदेश फिल्म विकास परिषद के चेयरमैन राजू श्रीवास्तव ने हाल ही में भाजपा छोड़कर दूसरी पार्टियों में जाने वाले नेताओं पर व्यंग्य बाण चलाए हैं। एक वीडियो इंटरनेट मीडिया पर वायरल है, जिस पर उन्होंने पार्टी छोड़कर गए नेताओं की स्थिति भी लोगों के सामने रखी है। अपनी बात में उन्होंने जहां एक ओर उदित राज और फिल्म अभिनेता शत्रुघ्न सिन्हा पर निशाना साधा है, वहीं स्वामी प्रसाद मौर्य और दारा सिंह पर भी व्यंग्य किया है। फिलहाल वायरल वीडियो की पुष्टि नहीं ये अखबार नहीं करता है। वीडियो में वह कहते दिख रहे हैं कि भाजपा में टिकट न मिलने के कारण उदित राज और शत्रुघ्न सिन्हा भाजपा छोड़कर चले गए। आज ये लोग बहुत सफल हैं। उदित राज को उन्होंने अमेरिका का राष्ट्रपति तो शत्रुघ्न सिन्हा को बेल्जियम का प्रधानमंत्री बताया। इसके आगे उन्होंने अभी चार दिन पहले भाजपा छोड़ने वाले स्वामी प्रसाद मौर्य पर कटाक्ष किया है कि अखिलेश यादव उन्हें भूटान का काउंसलर बनाने जा रहे हैं। दारा सिंह को युगांडा का राष्ट्रपति बनाने की बात उन्होंने अपने वीडियो में कही है। बता दें कि उत्तर प्रदेश में विधानसभा चुनाव का ऐलान चुनाव आयोग ने आठ जनवरी को किया। 403 सीटों वाली 18वीं विधानसभा के लिए 10 फरवरी से 7 मार्च तक सात चरणों में वोट पड़ेंगे। 10 मार्च को चुनाव के नतीजे आएंगे।

लोकतान्त्रिक पर्व

बामुलाहिजा

कार्टून: हसन जैदी

पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत लड़ सकते हैं चुनाव

» उत्तराखंड कांग्रेस आज घोषित कर सकती है प्रत्याशियों की पहली सूची

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

देहरादून। कांग्रेस की प्रदेश स्क्रीनिंग कमेटी की नई दिल्ली में चली बैठक में 70 सीटों पर प्रत्याशियों के चयन को मशक्कत की गई। 45 प्रत्याशियों के नाम तकरीबन तय कर लिए गए हैं। करीब 55 सीटों पर सहमति बनाने के संकेत हैं। देर शाम कमेटी की केंद्रीय चुनाव समिति के साथ बैठक होगी। इसके बाद प्रत्याशियों की पहली सूची घोषित की जा सकती है।

दिल्ली में दो दिन तक चली स्क्रीनिंग कमेटी की बैठक में टिकटों को लेकर आखिरी दौर का मंथन किया गया। अविनाश पांडे की अध्यक्षता में तकरीबन 45 सीटों पर प्रत्याशियों का चयन पर सहमति बनी है। सूत्रों के मुताबिक गढ़वाल और कुमाऊं मंडलों की करीब डेढ़ दर्जन सीटों पर प्रत्याशियों के चयन को अभी और मशक्कत की जा सकती है। हालांकि मोटे तौर पर सभी सीटों पर आम राय बनाने की कोशिश बैठक में की गई। बैठक के दौरान प्रदेश के नेताओं में कुछ सीटों पर मतभेद सामने आए। तय किया गया कि पार्टी के वरिष्ठ नेताओं की मौजूदगी में इन सीटों पर भी सहमति से निर्णय लिया जाएगा। पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत के चुनाव लड़ने और इस संबंध में सीट तय करने पर चर्चा हुई। इस पर फैसला हरीश रावत पर छोड़ा गया है। इस दौरान पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत ने कहा कि 70 सीटों पर विचार किया गया है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गणेश गोदियाल ने कहा कि सौहार्दपूर्ण वातावरण में स्क्रीनिंग कमेटी की बैठक हुई। इसमें अधिकांश सीटों पर एक दावेदार और कुछ सीटों पर दो दावेदारों का पैनल तैयार किया गया। शनिवार शाम तक सूची जारी होने की संभावना व्यक्त की। वहीं, पूर्व सीएम हरीश रावत का कहना है कि मैं चुनाव लड़ूंगा या नहीं, ये पार्टी तय करेगी। मैंने अपनी बात पार्टी के सामने रख दी है।

यूपी चुनाव : पिछड़े वर्ग के नेताओं के जाने से भाजपा की मुश्किलें बढ़ीं

» मौर्य के प्रभाव वाली सीटों पर भाजपा होगी कमजोर

» सपा को सीधे-सीधे दस सीटों का होगा फायदा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। प्रदेश में पिछड़े वर्ग में पैठ रखने वाले मंत्री स्वामी प्रसाद मौर्या, दारा सिंह चौहान, धर्म सिंह सैनी सहित अन्य दिग्गजों के भाजपा छोड़कर जाने से पार्टी को झटका लगा है। पिछड़े वर्ग के इन नेताओं के पार्टी छोड़ने से भाजपा के मौजूदा विधायकों की परेशानी बढ़ गई है। विधायक मान रहे हैं कि जो नेता पार्टी छोड़कर गए हैं उसका असर प्रदेश के उन विधान सभा क्षेत्रों में भी पड़ेगा, जहां उनकी जाति-समाज के लोग निर्णायक भूमिका में हैं। विशेषज्ञों की माने तो इन नेताओं के आने से भाजपा को दस सीटों का सीधा-सीधा नुकसान होगा बल्कि करीब 25 सीटों पर जातिगत प्रभाव पड़ेगा, ये सारी सीटें सपा के खाते में आ सकती हैं।

भाजपा इन सब बातों को जानकर काफी टेंशन में है। बता दें कि पडरौना (कुशीनगर) से विधायक व प्रदेश सरकार में मंत्री रहे स्वामी प्रसाद मौर्या, मऊ के मधुबन से विधायक व मंत्री दारा सिंह चौहान, सहारनपुर के नकुड़ से विधायक व राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभारी धर्म सिंह सैनी, बांदा के तिंदवारी से भाजपा विधायक बृजेश प्रजापति, कानपुर देहात के बिल्हौर से भगवती प्रसाद सागर, शाहजहांपुर की तिलहर से रोशन लाल वर्मा, औरैया की विधूना से विनय शाक्य, लखीमपुर खीरी से विधायक बाला प्रसाद अवस्थी व शिकोहाबाद के विधायक मुकेश वर्मा भाजपा छोड़ चुके हैं। मेरठ की मीरापुर सीट से भाजपा विधायक अवतार सिंह भड़ाना भी भाजपा छोड़कर रालोद में शामिल हो गए हैं। भाजपा छोड़कर सपा में शामिल होने वाले विधायकों में सीतापुर सदर से राकेश राठौर, खलिलाबाद से जय चौबे, नानपारा (बहराइच) से माधुरी वर्मा और बुलंदशहर से केके शर्मा के नाम शामिल हैं।

पिछड़े वोट बैंक को संदेश देने में जुटी भाजपा

इन विधायकों के भाजपा छोड़कर जाने की पार्टी के बड़े नेताओं की चिंता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि बीते दो दिन से भाजपा पिछड़े वोट बैंक को संदेश देने का प्रयास कर रही है कि पार्टी में ही पिछड़े वर्ग को आगे बढ़ने का मौका मिल सकता है।

खास प्रभाव रखते हैं सभी चेहरे

ये नेता अपनी जाति के चेहरे माने जाते हैं। यही वजह है कि 2017 विधान सभा चुनाव में भाजपा ने स्वामी प्रसाद मौर्या के साथ उनके बेटे उत्कृष्ट मौर्य को भी टिकट दिया। स्वामी प्रसाद के छह अन्य समर्थकों को भी टिकट दिया था। दारा सिंह चौहान की भी अपने समाज में अच्छी पकड़ है। चौहान को भाजपा ने ओबीसी मोर्चा का राष्ट्रीय अध्यक्ष जैसा महत्वपूर्ण पद भी दिया था। धर्म सिंह सैनी सहारनपुर से कांग्रेस के इमरान मसूद को चुनाव हराकर आए थे। हालांकि उस समय यूपी में मोदी लहर थी।

समय रहते डैमेज कंट्रोल नहीं हुआ तो बढ़ेगी परेशानी

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष स्वतंत्रदेव सिंह ने कहा कि ओबीसी समाज को सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक प्रतिनिधित्व का जितना भाजपा में मिला है उतना किसी सरकार में नहीं मिला। उनके लिए 'पी' का अर्थ पिछड़ों का उत्थान है, जबकि कुछ लोगों के लिए 'पी' का अर्थ सिर्फ पिता, पुत्र और परिवार का उत्थान है। भाजपा नेता भी दबी जुबान में मान रहे हैं कि यदि समय रहते डैमेज कंट्रोल नहीं हुआ तो पार्टी छोड़कर जाने वाले पिछड़े वर्ग के विधायक न केवल खुद की सीट पर भाजपा के वोट बैंक को प्रभावित करेंगे बल्कि अन्य सीटों पर भी मुश्किलें बढ़ाएंगे।

मिशन यूपी : चुनाव में वर्चुअल जंग तेज, भाजपा को रास आ रहीं डिजिटल रैलियां

कई दल वर्चुअल रैली को लेकर उठा चुके हैं सवाल

» कोरोना के कारण आयोग ने जारी किया है दिशा निर्देश, डाटा की खपत जोरों पर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। विधान सभा चुनाव की तारीखों के ऐलान के बाद प्रदेश में सियासी हलचल तेज हो चुकी है। सभी दल अपनी-अपनी रणनीति को जमीन पर उतार रहे हैं। वहीं कोरोना संक्रमण के कारण वर्चुअल रैलियों पर फोकस किया जा रहा है। भाजपा ने इसकी खासी तैयारी कर ली है और उसे वर्चुअल रैलियां रास भी आ रही हैं। वहीं कई दलों ने वर्चुअल रैली को लेकर आयोग के सामने सवाल उठाए हैं।

यूपी में विधान सभा चुनाव की सरगर्मियां तेज हो गयी हैं। अब जबकि मतदान के लिए एक महीने का समय बचा है, सभी राजनीतिक दल जी जान से चुनाव की तैयारियों में जुट गये हैं। वहीं इस बार प्रचार की दृष्टि से विधान सभा चुनाव की तस्वीर बिल्कुल बदली हुई है।

चुनाव आयोग ने 15 जनवरी तक रैलियों पर रोक लगा रखी है और यह माना जा रहा है कि कोरोना पीक पर होने के कारण रोक आगे बढ़ सकती है। ऐसे में वर्चुअल रैलियां होंगी, जिनको लेकर कुछ राजनीतिक पार्टियां मुखर हो रही हैं, वहीं दूसरी तरफ वर्चुअल जंग की भी तैयारी है। इस जंग में डाटा की खपत भी जोरों पर है।

कोरोना काल में हो रहे चुनाव में प्रचार के लिए रैलियों पर रोक लगाने के कारण डिजिटल मीडिया पर लोड बढ़ गया है। पार्टी प्रचार करने के लिए इंटरनेट मीडिया को माध्यम बना रहे हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि मोबाइल कंपनियों के इंटरनेट डेटा की खपत बढ़ गयी है। बीएसएनएल का रोजाना 38 फीसदी से अधिक डेटा खपत हो रहा है। चुनाव आयोग ने पहले ही संकेत दे दिए हैं कि वर्चुअल तरीके से चुनाव प्रचार पर जोर रहेगा। आयोग के रुख की वजह से पार्टियों में खलबली मची है। समाजवादी पार्टी, कांग्रेस ने इसका विरोध किया है। इसके पीछे तर्क यह दिया जा रहा है कि सरकार अपने तंत्र का दुरुपयोग कर सकती है। अखिलेश यादव ने चुनाव आयोग से वर्चुअल तरीके चुनाव लड़ने के लिए कुछ फंड्स देने की मांग भी की थी। चुनाव में वर्चुअल माध्यम से प्रचार की घोषणा फिलहाल भाजपा को सबसे ज्यादा रास आ रही है क्योंकि पिछले कुछ समय से पार्टी इसकी तैयारी कर रही है। पार्टी की तीन वर्चुअल रैलियां कोविड की दूसरी लहर के दौरान कर चुकी हैं, जिसे जेपी नड्डा, स्मृति ईरानी और नरेंद्र सिंह तोमर ने सम्बोधित किया था।

बसपा की आर्थिक सेहत खराब

लखनऊ। सियासी दलों की तरफ से चुनाव आयोग को वार्षिक ऑडिट या अंकेक्षण रिपोर्ट सौंपी गई है। रिपोर्ट में दर्शाए गए आंकड़ों के अनुसार, बहुजन समाज पार्टी की आय और खर्च दोनों ही क्षेत्र में गिरावट दर्ज की गई है। साल 2019-20 में बसपा की आय 58.2 करोड़ रुपये और खर्च 95 करोड़ रुपये से ज्यादा थी। 2020-21 में आय घटकर 52.46 करोड़ रुपये और खर्च 17.29 करोड़ रुपये पर आ गए हैं। हालांकि, नगदी और बैंक बैलेंस के मामले में बसपा की स्थिति काफी अच्छी है। 2020-21 के अंतिम दिन बसपा ये आंकड़ा 661.5 करोड़ रुपये पर था। उत्तर प्रदेश में पिछले विधान सभा चुनाव के दौरान 2016-17 में बसपा ने अपना कुल आय 173.5 करोड़ रुपये बताई थी।

Sanjay Sharma
editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

जिद... सच की

तीसरी लहर और लापरवाही

“ भारत सरकार ने सभी राज्यों को अस्पतालों को तैयार रखने और किसी भी स्थिति से निपटने के निर्देश दे दिए हैं बावजूद इसके लापरवाही चरम पर पहुंच चुकी है और संक्रमण का खतरा लगातार बढ़ता जा रहा है। सवाल यह है कि तमाम हिदायतों और पाबंदियों के बावजूद लापरवाही क्यों बरती जा रही है? क्या लोगों के मन से कोरोना का डर खत्म हो चुका है?

पिछले दो सालों से कोरोना ने पूरी दुनिया में कोहराम मचा रखा है। हर नये वेरिएंट के साथ एक नयी लहर हाहाकार मचा देती है। इसने दुनिया के न केवल चिकित्सा सिस्टम को ध्वस्त कर दिया है बल्कि अर्थव्यवस्था को भी घुटनों पर ला दिया है। भारत में डेल्टा और ओमिक्रॉन वेरिएंट के साथ तीसरी लहर का दौर शुरू हो गया है। पिछले दो दिनों से ढाई लाख से अधिक केस रोज मिल रहे हैं। वहीं मौतों का आंकड़ा भी तेजी से बढ़ने लगा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी चेतावनी जारी की है। भारत सरकार ने सभी राज्यों को अस्पतालों को तैयार रखने और किसी भी स्थिति से निपटने के निर्देश दे दिए हैं बावजूद इसके लापरवाही चरम पर पहुंच चुकी है और संक्रमण का खतरा लगातार बढ़ता जा रहा है। सवाल यह है कि तमाम हिदायतों और पाबंदियों के बावजूद लापरवाही क्यों बरती जा रही है? क्या लोगों के मन से कोरोना का डर खत्म हो चुका है? आखिर लोग कोरोना प्रोटोकॉल का पालन क्यों नहीं करना चाहते हैं? राज्य सरकारें कोरोना प्रोटोकॉल को लेकर गंभीर क्यों नहीं दिख रही हैं? क्या दूसरी लहर से राज्य सरकारों ने कोई सबक नहीं सीखा है?

कोरोना की तीसरी लहर बेहद खतरनाक तेजी से देश के कई राज्यों में फैल रही है। दिल्ली, महाराष्ट्र, बंगाल समेत यूपी में संक्रमण तेजी से फैल रहा है। संक्रमण को रोकने के लिए कई राज्यों ने पाबंदियां लगायी हैं लेकिन वे सभी बेअसर हैं। बाजार से लेकर सब्जी मंडी तक भीड़ उमड़ रही है। यहां पर लोग कोरोना से बेखबर होकर एक-दूसरे को संक्रमण बांट रहे हैं। अधिकांश लोग मास्क और सोशल डिस्टेंसिंग का पालन नहीं कर रहे हैं। दुकानदार भी बिना मास्क के दुकानदारी चला रहे हैं। मेलों में भीड़ उमड़ रही है। हकीकत यह है कि राज्य सरकारों ने पाबंदियों को जारी कर अपने कर्तव्यों की इतिश्री कर ली है। उसका कड़ाई से पालन नहीं कराया जा रहा है। हालात यह है कि पुलिसकर्मी तक तेजी से संक्रमित हो रहे हैं। यही नहीं अभी भी लोग वैक्सीन लगवाने से कतरा रहे हैं। यह स्थिति तब है जब विशेषज्ञों ने साफ तौर पर कह दिया है कि वैक्सीन बेहद जरूरी है और संक्रमण की दशा में यह व्यक्ति के जीवन की रक्षा करता है। हैरानी की बात यह है कि लोगों के मन से कोरोना का खौफ जैसे खत्म हो गया है। हालांकि केंद्र सरकार ने इसके गंभीर खतरे को लेकर राज्य सरकारों को आगाह कर दिया है लेकिन इसका कोई असर नहीं दिख रहा है। जाहिर है यदि लोगों ने कोरोना प्रोटोकॉल का पालन नहीं किया तो हालात बेहद खराब हो सकते हैं। बेड और इलाज की किल्लत हो सकती है। ऐसे में राज्य सरकारों को जल्द से जल्द कोई ठोस कदम उठाना चाहिए।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

महामारी के बीच मतदान पर सवाल

अशोक मधुप

पांच राज्यों- उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, मणिपुर और गोवा में चुनाव की घोषणा होने के साथ ही देश में तेजी से बढ़ते कोरोना के केस चिंता बढ़ा रहे हैं। मन में भय पैदा कर रहे हैं। सरकार और चिकित्सक कह रहे हैं कि नया वायरस ज्यादा गंभीर नहीं है। इस सबके बावजूद कोई इन पर यकीन करने को तैयार नहीं। महाराष्ट्र और दिल्ली में तेजी से बढ़े केस के बाद सरकार द्वारा लागू की गई सख्ती और दिल्ली में लगे वीकेंड लॉकडाउन से जनता में भय व्याप्त है। श्रमिक पलायन कर रहे हैं। सब डरे सहमे हैं।

जिस तेजी से केस बढ़ रहे हैं ऐसे में लगता है कि हो सकता है कि मतदान के दिन चुनाव ड्यूटी पर तैनात अधिकांश कर्मी कोरोना पॉजिटिव होकर पृथक वास में हों। मतदाता बूथ से गायब हों। राजनैतिक दल, चुनाव आयोग और सरकार ही बूथ की निगहबानी करती नजर आए। आम जनता चाहती है कि पांच राज्यों में होने वाले चुनाव न हों। कोरोना के बढ़ते केस को लेकर अधिकतर लोग चिंतित हैं, किंतु राजनैतिक दल नहीं चाहते कि चुनाव टलें। सरकार भी इस पर चुप्पी साधे है। ऐसे में चुनाव आयोग ने चुनाव कराने की घोषणा कर दी। कोराना महामारी के काल में आयोग को प्रदेश में मतदाताओं और मतदान में लगने वाले कर्मियों की राय लेनी चाहिए थी। क्या वह भी इसके लिए तैयार हैं? जिन्हें वोट डालने हैं, उनसे पूछा नहीं गया और तय कर दिया कि चुनाव तो होंगे ही। कोरोना की हालत यह है कि मामले तेजी से बढ़ते जा रहे हैं वह दिल दहलाने वाले हैं। कोराना केस बढ़ने की ये ही हालत रही तो मतदान के दिन तक देश में कोरोना के मामलों की संख्या करोड़ों में होगी। अस्पताल में बैड नहीं होंगे। दूसरी लहर की तरह दवा और बेड को लेकर मारामारी होगी। इस बार तो बड़े-बड़े वीआईपी कोरोना की चपेट में आ रहे हैं। दिल्ली पुलिस के जनसंपर्क अधिकारी चिन्मय बिस्वाल समेत 1000 सिपाही कोरोना पॉजिटिव मिले हैं। इससे पहले संसद के 400 कर्मचारी कोरोना के संक्रमण के शिकार हो चुके हैं।

रिपोर्टों के मुताबिक उत्तर प्रदेश में पिछले पंचायत चुनाव में तैनात 1600 के आसपास कर्मचारी ड्यूटी के दौरान कोरोना से मरे थे। इस चुनाव के बाद उत्तर प्रदेश, दिल्ली और महाराष्ट्र समेत कई राज्यों में कोराना बुरी तरह फैला था। सबसे ज्यादा खराब हालत गांवों की थी। एक-एक गांव में एक-एक

आम जनता चाहती है कि पांच राज्यों में होने वाले चुनाव न हों। कोरोना के बढ़ते केस को लेकर अधिकतर लोग चिंतित हैं, किंतु राजनैतिक दल नहीं चाहते कि चुनाव टलें। सरकार भी इस पर चुप्पी साधे है। ऐसे में चुनाव आयोग ने चुनाव कराने की घोषणा कर दी। कोरोना महामारी के काल में आयोग को प्रदेश में मतदाताओं और मतदान में लगने वाले कर्मियों की राय लेनी चाहिए थी।

दिन में कई-कई मौत हो रहीं थी। सरकार असहाय बनी देख रही थी। शहरों के मरीजों को ही अस्पताल में बेड और दवाई उपलब्ध नहीं थीं। गांव की सोचने की किसे पड़ी थी। चुनाव आयोग ने रैली, सभा और बाइक रैली आदि निकालने पर रोक लगाई है। काफी बंदिशें रखीं हैं। इन सबके बावजूद चुनाव सरकारी कर्मचारी, पुलिस, पैरा मिलिट्री फोर्स को कराना है। वोट प्रदेश के मतदाता को डालना है। चुनाव की घोषणा के बाद से सबसे ज्यादा चिंतित सरकारी कर्मचारी और उनके परिवारजन हैं। डरे हुए हैं। वैसे ही कर्मचारी स्वेच्छा से चुनाव ड्यूटी नहीं करना चाहता। अब तो कोरोना की आफत सिर पर मौजूद है। सब सकते में हैं। पहले ही वह कोई न कोई बहाना बनाकर चुनाव ड्यूटी कटवाना चाहता था। अब तो कोरोना जैसी महामारी में कोई बिरला ही ड्यूटी करना चाहेगा। जो करना चाहेगा, उसे उसके परिवारजन रोकेंगे। कहेंगे पहले परिवार की सोचो। इन कर्मचारियों को चुनाव तक लंबी प्रक्रिया से गुजरना है। चुनाव सामग्री और ईवीएम की व्यवस्था में ही बड़ा स्टाफ लगता है। इस दौरान बहुतों के संपर्क में आना होता है। मतदान और मतगणना तो बहुत बाद की बात है। लोकतंत्र में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण मतदाता बताया गया है। कहा गया है कि वह सरकार बनाता और बिगाड़ता है। कोरोना महामारी के दौरान वह मतदान करेगा या नहीं, उससे नहीं पूछा गया। कहा जा रहा है कि कोरोना से बचना है तो घर में रहो। अनावश्यक रूप से बाहर न निकलो। अब यह इन पांच प्रदेश के मतदाताओं को सोचना है कि उसे जान प्यारी है या मतदान। क्या उसे जान की सुरक्षा की कीमत पर मतदान करने घर से निकलना है।

इलाज का विकल्प टेलीमेडिसिन

डा. अंशुमान कुमार

टेलीमेडिसिन यानी स्वास्थ्य देखभाल की ऐसी विधा, जिससे दूरस्थ इलाकों तक स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच सुलभ हो सके। वर्तमान परिस्थितियों के मद्देनजर टेलीमेडिसिन विधा से मरीजों की देखभाल, इलाज और चिकित्सकीय परामर्श उपलब्ध कराने की कोशिश की जा रही है। किन्हीं कारणों से जो लोग अस्पतालों तक नहीं जा सकते, उनके लिए यह एक वैकल्पिक सुविधा है। टेलीमेडिसिन एक अवसर है। हालांकि, कई तरह की चुनौतियां भी हैं, मसलन तकनीकी, डेटा सुरक्षा, विश्वसनीयता आदि प्रश्नों पर भी गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। कोविड-19 महामारी से पूर्व स्वास्थ्य देखभाल कार्यप्रणाली सख्त थी। अमूमन, मरीज अस्पताल आता है, डॉक्टर उसे देखता है और जांच कराने के लिए कहता है। जांच रिपोर्ट देखने के बाद इलाज शुरू होता है।

करीब छह-सात साल पहले एक डॉक्टर ने अपने मरीज को व्हॉट्सएप पर सलाह दे दी थी। वह पहले से ही डॉक्टर का देखा हुआ मरीज था। मरीज को कुछ दिक्कत हुई। बाद में मामले का संज्ञान लेते हुए बांबे हाइकोर्ट ने कहा कि व्हॉट्सएप पर इलाज करना गैरकानूनी है। हालांकि, इस तरह के इलाज के लिए आज भी कानून नहीं है। आज की परिस्थितियों के मद्देनजर टेलीमेडिसिन विकल्प बन गया है। हालांकि, एक स्थापित सेटेलाइट सिस्टम का मतलब टेलीमेडिसिन नहीं होता। इसके विविध आयाम होते हैं। वे यह व्यवस्था आप निजी क्षेत्र के हवाले कर रहे हैं। वे तकनीक की मदद से एक व्यवस्था बनायेंगे। उनका ध्यान इलाज से अधिक मुनाफे पर होगा। कोरोना काल में लोगों को लग रहा है कि इलाज के लिए डॉक्टर उपलब्ध नहीं हैं। अस्पताल जाने पर संक्रमण का डर है। ऐसे में एक विकल्प खोला गया टेलीमेडिसिन का, यानी टेलीफोनिक या वीडियो परामर्श के जरिये इलाज। जो इलाज अस्पताल में हो रहा था, वही टेलीफोन या वीडियो के माध्यम से भी हुआ। इससे आत्मविश्वास मिला कि यह व्यवस्था सफल हो सकती है। सिस्टम को मजबूत करने, तकनीक विस्तार जैसी बातें हुईं और सरकार भी आगे आयी।

टेलीमेडिसिन में कुछ बातों पर चर्चा जरूरी है। पहला, टेली-कंसल्टेशन यानी इसमें डॉक्टर मरीज को देखेगा, टेली-रेडियोलॉजी, यानी एक्सरे वहीं होगा, उसके अपलोड किये गये डिजिटल प्रारूप को किसी शहर में बैठे रेडियोलॉजी डॉक्टर ने देखा और, आपकी रिपोर्ट डॉक्टर तक पहुंच गयी, इस तरह इलाज के लिए आपको बाहर नहीं निकलना पड़ा। तीसरा, टेली-पैथोलॉजी, रक्त वगैरह की जांच घर बैठ कर संभव है। इस तरह जांच रिपोर्ट भी आपके पास आ जायेगी और इसी आधार पर डॉक्टर आपको दवा भी दे देगा। बहरहाल, टेलीमेडिसिन में कुछ चीजें ज्ञात या अज्ञात रूप में शामिल हो गयी हैं। वह न तो मरीज को पता है न सिस्टम को। जैसे- रेडियोलॉजी का डॉक्टर बेंगलुरु में है और हमारा डेटा दिल्ली से ट्रांसफर हुआ, वहां से रिपोर्टिंग कर दी। मरीज को नहीं पता है कि रिपोर्टिंग बेंगलुरु में हुई है। इस दौरान डेटा लीक भी हो सकता है क्योंकि डेटा किसी अन्य कंपनी के पास जा रहा है। इसके लिए क्या व्यवस्था बनायी जायेगी, यह एक बड़ा सवाल है। टेलीमेडिसिन से जुड़ी सामान्य चिंताओं का समाधान तो हो जायेग, लेकिन सर्जिकल समस्याओं के लिए मरीज को अस्पताल जाना होगा। टेलीमेडिसिन का उद्देश्य होना चाहिए कि लोगों को सस्ती सेवाएं मिल सकें। दूसरा, मरीज को यात्रा न करनी पड़े, इससे समय और धन दोनों बचेगा। इलाज के लिए उसे अपने काम से छुट्टी नहीं लेनी पड़ेगी अगर कम फीस पर समुचित उपचार उपलब्ध हो सके तो टेलीमेडिसिन बहुत ही बढ़िया है लेकिन इससे जुड़ी कुछ व्यवस्थागत चिंताएं भी हैं। टेलीमेडिसिन में सहयोगी सेवाएं भी शामिल होंगी, जैसे डेटा ऑपरेटर, मशीन ऑपरेटर, वेंडर आयेंगे। वे आपदा में अवसर तलाशेंगे। जो टेलीमेडिसिन चला रहा है, वह डॉक्टर के पैसे में हिस्सा लेगा। कुल मिलाकर इसका तेजी से व्यापारीकरण होने लगेगा। टेलीमेडिसिन से स्वास्थ्य देखभाल व्यवस्था प्रभावी हो सकती है, बशर्ते कि वह सही तरीके से और सही दिशा में हो। अरस्तू ने कहा है कि लोकतंत्र में बहुत शक्ति है, यदि नैतिकता रहे तो अगर नैतिकता खत्म हो गयी, तो लोकतंत्र भीड़तंत्र बन जाता है। टेलीमेडिसिन में इन चिंताओं का समाधान करने की आवश्यकता है। टेलीमेडिसिन की कामयाबी के लिए कुछ बुनियादी व्यवस्थाओं को मजबूत करना होगा। देश के कई इलाकों में इंटरनेट की समुचित पहुंच नहीं है। जिन ग्रामीण इलाकों को सुविधा देना चाहते हैं, उनके सामने टेलीकॉम नेटवर्क और इंटरनेट जैसे मूलभूत समस्याएं हैं।

पहले, उन इलाकों में बिजली की उपलब्धता हो, अबाधित मोबाइल नेटवर्क कनेक्शन, कम-से-कम 4जी कनेक्शन जरूरी होगा क्योंकि वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के लिए मजबूत नेटवर्क की आवश्यकता होती है। वीडियो स्ट्रीमिंग रीयलटाइम होनी चाहिए, मरीज ने कुछ बोला और डॉक्टर को वह स्पष्ट नहीं हुआ तो उचित इलाज कैसे हो पायेगा। तीसरा, नवीनतम तकनीक की सुविधा उपलब्ध हो अगर बेहतर गुणवत्ता की डिवाइस नहीं होगी, तो अच्छा नेटवर्क होने पर भी कम्युनिकेशन नहीं हो पायेगा, दोनों का इंटरफेस सिस्टम को सपोर्ट करना चाहिए। मरीजों के डेटा की गोपनीयता को लेकर आश्वस्त करना होगा। राज्यवार व्यवस्था से अनेक तरह की अड़चनें हैं। हालांकि जब कोई भी व्यवस्था व्यापक सोच-विचार के साथ बनेगी, तो वह निश्चित ही सफल होगी।

विदेशों में भी हो रही है जय भीम की तारीफ

फिल्में समाज का आईना होती हैं। अधिकतर फिल्मों में लोगों को समाज की कड़वी हकीकत से रूबरू कराया जाता है। तमिल भाषा में बनी जय भीम फिल्म की कहानी भी ऐसी है। जय भीम एक सच्ची घटना पर आधारित फिल्म है, जिसमें आदिवासी लोगों के साथ होने वाले अत्याचार को बखूबी दिखाया है। फिल्म को हिंदुस्तान की जनता ने तो प्यार दिया ही, लेकिन अब चीन में भी इसकी काफी सराहना हो रही है।

आदिवासी कपल की कहानी पर बनी है फिल्म

टी. जे ज्ञानवेल के निर्देशन में बनी फिल्म में सूर्या, के. मणिकंदन, लिजोमोल जोस और प्रकाश राज ने अहम भूमिका निभाई है। फिल्म की कहानी ऐसे वकील के जीवन पर आधारित है, जो आदिवासी लोगों के साथ होने वाले अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाता और जीतता भी है। फिल्म में दिखाया गया कि कैसे पुलिस अपने फायदे के लिये मासूम और गरीब लोगों के जीवन के साथ खेलती है। फिल्म में पुलिस की हैवानियत को इतने करीब से दिखाया गया कि कुछ सीन्स देख कर आपकी रूह कांप उठे। फिल्म को IMDb पर 9.3/10 रेटिंग दी गई है। जय भीम ने चीन में भी काफी बेहतर प्रदर्शन किया है। चीन के रिव्यू प्लेटफॉर्म Douban पर फिल्म को 8.7/10 रेटिंग दी गई है। तमिल फिल्म को इंटरनेशनल प्लेटफॉर्म पर इतना प्यार मिलना, बेहद बड़ी बात है। चीन की जनता को जय भीम की कहानी इसलिये भी पसंद आई, क्योंकि तमिल के जैसा ही केस चीन में भी हुआ था। जय भीम की कहानी की तरह जापान में एक चीन की महिला की हत्या कर दी गई थी, जिसके खिलाफ न्यायपालिका में काफी लंबा केस लड़ा गया

बॉलीवुड | मसाला

था। इसके अलावा फिल्म में जाति के आधार पर लोगों के साथ होने वाले भेदभाव को भी दर्शाया गया। भ्रष्टाचार, जाति व्यवस्था और अन्याय के खिलाफ बनी फिल्म की कहानी चीन के लोगों के दिल को छू गई। बस इसलिये हर कोई फिल्म की तारीफ करते नहीं थक रहा। अगर आपने फिल्म नहीं देखी है, तो अब भी देर नहीं हुई देख लीजिये। अच्छा लगेगा।

बॉलीवुड | मन की बात

फैमिली प्लानिंग पर चोपड़ा ने तोड़ी चुप्पी

प्रियंका चोपड़ा हमेशा ही किसी न किसी कारण छाई रहती हैं। वह आज जिस मुकाम पर हैं, वहां फैंस उनकी एक झलक पाने के लिए बेकरार रहते हैं। उन्होंने सिर्फ और सिर्फ अपनी मेहनत के दम पर ये मुकाम हासिल किया है। प्रोफेशनल लाइफ के अलावा प्रियंका अपनी निजी जिंदगी को लेकर भी खूब सुर्खियों में रहती हैं। प्रियंका और निक ने साल 2018 में शादी की थी और अब अभिनेत्री ने फैमिली प्लानिंग को लेकर बात की है। बता दें कि ऐसा पहली बार नहीं हुआ है जब प्रियंका से बेबी को लेकर सवाल किया गया हो। प्रियंका का कहना है कि बेबी उनके और पति निक के लिए भविष्य का बहुत बड़ा हिस्सा है। हाल ही में दिए एक इंटरव्यू में प्रियंका ने बताया कि भविष्य में वह मां बनेंगी, लेकिन जब भी ऐसा होगा तो उनकी और निक की लाइफ में बड़ा बदलाव होगा और वह इस बदलाव के लिए तैयार हैं। उन्होंने कहा, यह हमारे भविष्य का बहुत बड़ा हिस्सा है। भगवान की कृपा से जब यह होगा, तब होगा। इंटरव्यू में जब आगे प्रियंका से पूछा गया कि वह और निक अपनी जिंदगी में बहुत बिजी रहते हैं तो अभिनेत्री ने चुटकी लेते हुए कहा, नहीं हम प्रैक्टिस करने में बहुत बिजी नहीं रहते। गौरतलब है कि प्रियंका और निक की शादी 2018 में राजस्थान के जोधपुर में बिल्कुल शाही अंदाज में हुई थी। हिन्दू रीति-रिवाज के अलावा इन्होंने ईसाई धर्म के अनुसार भी शादी की। इनकी शादी और रिसेप्शन की तस्वीरें सोशल मीडिया पर काफी वायरल हुई थीं।

दमदार अंदाज में लौट रहे हैं प्रियांशु चटर्जी

प्रियांशु चटर्जी एक बार फिर से पर्दे पर दमदार अंदाज में वापसी करने जा रहे हैं। जल्द ही उन्हें वेब सीरीज बरुण राय एंड द हाउस ऑन द क्लिफ में देखा जाने वाला है। इस सीरीज में उनके साथ सिड मक्कड़, न्यारा बनर्जी, ब्रिटिश अभिनेता टोनी रिचर्डसन, जॉर्ज डॉसन, एम्मा गैलियानो जैसे सितारे भी दिखेंगे। यह मनोवैज्ञानिक हॉरर सीरीज 28 जनवरी से इरोज नाउ पर स्ट्रीम होने के लिए तैयार है। सैम भट्टाचार्जी द्वारा सह-निर्मित और निर्देशित 6 एपिसोड वाली सीरीज, एक प्रतिभाशाली परामनोवैज्ञानिक जासूस के जीवन का अनुसरण करती है। इस सीरीज को लेकर फिल्म की टीम काफी उत्साहित है। इस सीरीज के बारे में बात करते हुए अभिनेता प्रियांशु चटर्जी कहते हैं, मुझे डरावनी जगह पसंद है और मैं इस परियोजना का हिस्सा बनने के लिए रोमांचित हूं। मुझे यह स्वीकार करना होगा कि बरुण राय एंड द हाउस ऑन द क्लिफ थोड़ी अलग सीरीज है। दूसरी ओर, सैम भट्टाचार्जी कहते हैं, हम इस सीरीज पर लोगों की प्रतिक्रिया को देखने के लिए बहुत उत्साहित हैं और दर्शकों यह पसंद आएगी। हमारे पास स्क्रीन पर एक प्रतिभाशाली कलाकार और एक समान रूप से प्रतिभाशाली टीम है। मैं इरोज नाउ पर बरुण राय को दूसरी दुनिया से संपर्क करते देखने के लिए उत्सुक हूं।

बॉलीवुड | गपशप

इस ब्रिज को देखने के लिए दूर-दूर से आते थे लोग

दुनिया में ऐसी कई सारी जगहें हैं जो अपने निर्माण के लिए जानी जाती हैं। लोग इन्हें देखने के लिए देश-विदेश भी आते हैं। इन जगहों में इमारत, सड़क, पुल या फिर सुरंग जैसी जगहें होती हैं। ताजमहल, पीसा की मीनार, एफिल टावर, बुर्ज खलीफा ऐसी ही कुछ इमारते हैं जो अपनी बनावट के लिए पूरी दुनिया में मशहूर हैं। ब्रिटेन में ऐसी ही एक मशहूर जगह है लिंकन का हाई ब्रिज जिसे देखने के लिए लोग दूर-दूर से आते हैं। यह ब्रिज करीब साढ़े आठ सौ सालों से अपने निर्माण के लिए जाना जाता है। इस ब्रिज का निर्माण साल 1160 ईस्वी में हुआ था। इस ब्रिज में बने छेद को देखने के लिए लोग दूर-दूर से आते हैं। इस ब्रिज की खास बात इसके बने छेद में थी, लेकिन अब लोगों को इसकी सच्चाई का पता चल चुका है। मध्यकालीन युग में लिंकन के हाई ब्रिज का निर्माण हुआ था। ये ब्रिज ब्रिटेन के सबसे पुराने निर्माणों में से एक माना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि इस ब्रिज में जो छेद है वो ऐतिहासिक है। ये ब्रिटेन के इतिहास से जुड़ा हुआ ब्रिज है। अब तक इस ब्रिज को लाखों लोगों ने देखा है और इसके इतिहास को भी जाना है। मगर, वहीं अब इस ब्रिज पर लोग सवाल खड़े कर रहे हैं। लोगों का ऐसा कहना है कि ब्रिज में बना छेद किसी भी प्रकार से ऐतिहासिक नहीं है और इसे लेकर लोगों में भ्रम पैदा किया गया है। ये मात्र एक साधारण सा छेद है जो किसी भी ब्रिज में बनाया जाता है। इस ब्रिज के बारे में सबसे पहले एक पर्यटक ने इसकी तस्वीर साझा करते हुए अपने अनुभव को भी बताया। उसने बताया कि जब वो इस ब्रिज को देखने गया तो उसे ऐसा महसूस हुआ कि इस ब्रिज में जो छेद बना है उसमें ऐसा कुछ भी खास नहीं है। इस छेद को लोगों ने बेवजह ही मशहूर कर दिया है और लोग इसे ग्लोरी होल बिना किसी ऐतिहासिक कारण के कहते हैं। पर्यटक ने आगे बताया कि इस ब्रिज के ऊपर कुछ दुकानें बनी हुई हैं। जब आप इस होल को देखने के लिए नाव में बैठकर नदी क्रॉस करते हैं तो आपको ऐसा कुछ भी नहीं दिखाई देगा जिसकी उम्मीद आप करते हैं। न ही आपको इसके अंदर कोई गुप्त दरवाजा दिखाई देगा और न ही कोई गुप्त रास्ता। विधम नदी के ऊपर बने हुए इस ब्रिज का उपयोग किसी भी खास काम के लिए नहीं हुआ था। वैसे ये ब्रिज ब्रिटेन के सबसे पुराने पुलों में से एक है। अब जब ये सच्चाई तस्वीरों के माध्यम से सामने आई है तो जिन लोगों ने ब्रिज को देखा है। उन्होंने भी अपनी सहमति जताते हुए माना है कि वाकई में इस ब्रिज का कोई ऐतिहासिक महत्व नहीं है। ये देखने में खूबसूरत दिखाई देता है और इसका निर्माण हुए काफी साल बीत गए हैं। अंदर से देखने पर ये आम ब्रिज की तरह ही दिखाई देगा।

अजब-गजब | डेथ वैली के नाम से है मशहूर रहस्यमयी जगह

यहां पत्थर भी अपने आप चलते हैं!

यह दुनिया रहस्यों से भरी हुई है। यहां ऐसी कई रहस्यमयी चीजें हैं, जिनका राज आज तक कोई नहीं सुलझा पाया। वैज्ञानिक भी इनको देखकर हैरत में पड़ जाते हैं। इन रहस्यमयी जगहों में से एक जगह अमरीका के कैलिफोर्निया में भी स्थित है। यह जगह डेथ वैली के नाम से भी मशहूर है। ये वैली पत्थरों की वजह से दुनियाभर में मशहूर है। आज तक इस वैली का रहस्य कोई नहीं सुलझा पाया।

पत्थर खुद पहुंच जाते हैं दूसरी जगह पर

इस वैली के बारे में कहा जाता है कि यहां पत्थर खुद ब खुद चलकर एक जगह से दूसरी जगह पहुंच जाते हैं। बताया जाता है कि जब कोई पत्थर एक जगह से दूसरी जगह खिसककर जाते हैं तो अपने निशान भी छोड़ते जाते हैं। इन निशानों को देखकर ऐसा लगता है कि जैसे कोई गाड़ी रेगिस्तान की धूल में निशान छोड़ रही है।

1 किलोमीटर तक खिसक गया 317 किलो का पत्थर

रिपोर्ट के अनुसार इस वैली का रहस्य सुलझाने के लिए वर्षा 1972 में वैज्ञानिकों का दल आया था। वैज्ञानिकों ने इन पत्थरों पर 7 सालों तक रिसर्च किया। उस वक्त उन्होंने 317 किलोग्राम के एक पत्थर का

विशेष रूप से अध्ययन किया। उस वक्त वह पत्थर बिल्कुल भी नहीं हिला था। कुछ सालों के बाद जब वैज्ञानिकों ने दोबारा उस पत्थर का पता लगाया तो वह पत्थर 1 किलोमीटर दूर मिला था। वैज्ञानिक इससे हैरान रह गए थे।

नहीं सुलझा रहस्य

इसके बाद यहां कई रिसर्च किए जा चुके है। पता लगाने की बहुत कोशिश की गई कि यहां पत्थर कैसे अपने आप खिसकते जाते हैं। कई रिसर्च के बाद भी यह रहस्य नहीं सुलझा। यह रहस्य ही बना रहा। देश-विदेश के कई पर्यटक इस रहस्यमयी जगह को देखने आते हैं। इस वैली का इलाका 225 किमी के दायरे में फैला हुआ है। हालांकि आज तक किसी ने भी इन पत्थरों को चलते नहीं देखा है,लेकिन ये पत्थर खिसकने के बाद अपने पीछे लंबी रेखा छोड़ जाते हैं। इन रेखाओं से ही पता चलता है कि ये पत्थर एक स्थान से दूसरे स्थान पर खिसक जाते हैं।

सुन्दरता में चार चांद लगाती है ईयररिंग्स

बिना ज्वैलरी के महिलाओं का श्रंगार अधूरा हैं। वहीं ज्वैलरी में कानों में पहनने वाले आभूषण का और भी ज्यादा योगदान होता है। इसे पहन महिलाओं की सुंदरता में चार चांद लग जाते हैं। आजकल कई डिजाइन के ईयररिंग्स आते हैं, जिसे महिलाएं हर तरह के कपड़ों के साथ मैच कर पहनना पसंद करती हैं। कैजुअल आउटफिट के साथ जहां चंकी-फंकी हल्के फुल्के ईयररिंग्स अच्छे लगते हैं तो वहीं फॉर्मल्स के लिए स्टड का अपना क्रेज है। वहीं बात जब किसी वेडिंग पार्टी की आए तो कानों में लहराते बड़े झुमके शानदार लगते हैं। इन ईयररिंग्स से जुड़े कुछ हैक्स जरूर आपको पता होने चाहिए, जिससे कि इन्हें पहनना आसान हो जाए। तो चलिए जानें क्या है ईयररिंग्स से जुड़े हैक्स।

ईयररिंग को कानों में फंसाने के लिए कागज के टेप का इस्तेमाल करें

वेडिंग फंक्शन में अगर हैवी ईयररिंग्स पहनने का मन है। लेकिन ये ईयररिंग्स कानों में टिक ही नहीं रही। तो ये ट्रिक जरूर काम आएगी। ईयररिंग को कानों में फंसाने के लिए कागज के टेप का इस्तेमाल करें। इन टेप के छोटे टुकड़े को कान के छेद के पिछले हिस्से पर लगाकर ईयररिंग्स को पहन लें। ये आपके कानों में आसानी से सेट हो जाएंगी।

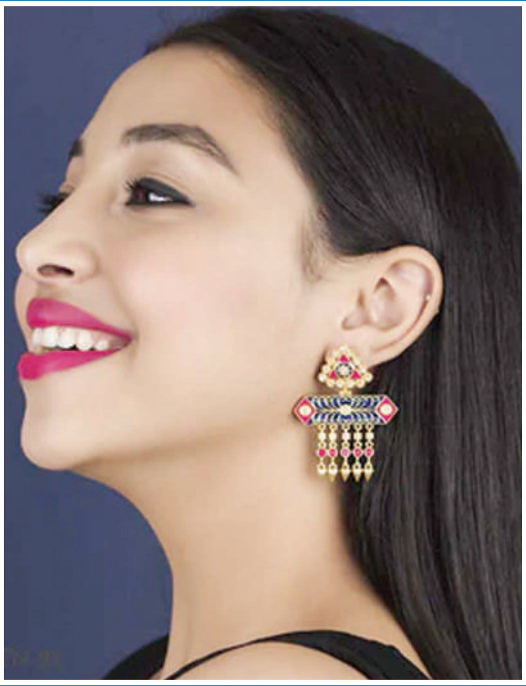

फेंके न, ब्रोच के तौर पर इस्तेमाल करें

कई बार अच्छी और महंगी ईयररिंग्स खो जाती है। ईयररिंग्स तो हमेशा पेयर में ही अच्छी लगती है। ऐसे में अपनी पसंदीदा ईयररिंग्स को खो देना बहुत दुखी कर देता है। अगर आपकी ईयररिंग्स का एक जोड़ा खो गया है तो दूसरी ईयररिंग्स को फेंकने के बजाए कुर्ते या शर्ट में ब्रोच के तौर पर इस्तेमाल करें। यकीन मानिए ये बेहद खूबसूरत नजर आएगा।

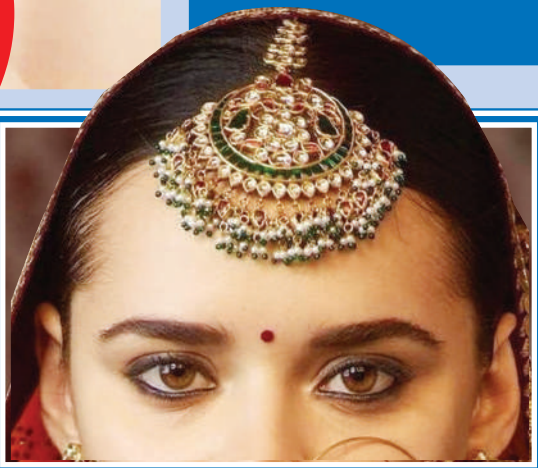

मांग टीका के तौर पर भी कर सकती है इस्तेमाल

ट्रेडिशन लुक में तैयार हो रही हैं और मांग टीका लगाने की इच्छा है तो परेशान ना हो। अपनी पसंदीदा ईयररिंग्स को मांगटीका बनाकर भी पहना जा सकता है। बस इस ईयररिंग्स को धागे में फंसाकर बालों में इस तरह से सेट करें कि धागा आसानी से छुप जाए। ईयररिंग्स का ऐसा इस्तेमाल देख हर कोई हैरान रह जाएगा। तो अगली बार किसी भी महंगी ईयररिंग्स को बेकार ना समझिएगा। ये कानों में पहनने के साथ ही ब्रोच से लेकर मांग टीका के तौर पर इस्तेमाल की जा सकती है।

हंसना मना है

नेता जी, किसानों से मिलने गए, नेता: ये आपके पैर खेत में गंदे क्यों हो जाते हैं किसान: साब मिट्टी है न खेत में इसलिए नेता ओह! चिंता मत करो,हमारी सरकार आई तो पूरे खेत में फर्श बनवा देंगे किसान अभी तक बेहोश है...

डॉक्टर: जब तुम तनाव में होते हो क्या करते हो? मरीज: जी, मंदिर चला जाता हूं... डॉक्टर: बहुत बढ़िया, ध्यान-व्यान लगाते हो वहां? मरीज: जी नहीं, लोगों के जूते चप्पल मिक्स कर देता हूं, फिर उन लोगों को देखता रहता हूं... उनको तनाव में देख कर मेरा तनाव दूर हो जाता है।

पप्पू ने गलफ्रेंड से पूछा-तुम चाइनीज जैसी क्यों दिखती हो? गर्लफ्रेंड: मेरे पापा चीन के थे। पप्पू: तुमने कभी मिलवाया नहीं? गर्लफ्रेंड: वह अब इस दुनिया में नहीं हैं पप्पू: हां, चाइनीज माल ज्यादा दिन तक टिकता भी कहां है...

लड़कों को उस समय सबसे ज्यादा गुस्सा आता है। जब ऑटो में 2 लड़कियों के बीच में लड़का बैठा हो तब तीसरी लड़की के आने से ऑटो वाला बोले भाई तू आगे आजा...

लड़की देखने सपरिवार पहुंचा रवि... उनके सामने लड़की के गुणों की प्रशंसा की जा रही थी। लड़की वालों ने कहा, सीमा की आवाज कोयल जैसी है,उसकी गर्दन तो मोरनी के जैसी है, चाल हिरणी जैसी और स्वभाव में से तो गाय है। रवि ने कहा, जी, क्या इसमें कोई इंसानी गुण भी हैं?

कहानी — दो बकरियां

एक समय की बात है। एक बहुत बड़ा घना जंगल था और उसमें दो बकरियां रहती थी। उस घने जंगल के बीच में से एक नदी बहती थी और दोनों बकरियां उस नदी के दोनों किनारों की तरफ रहती थी। इस प्रकार वे दोनों अपने अपने किनारे की तरफ की हरी घास खाया करती थी। एक दिन उनमें से एक बकरी ने सोचा कि मैं हमेशा ही नदी के इस किनारे की तरफ रहकर घास खाती हूँ, मैंने कभी भी नदी के उस तरफ जाकर भी नहीं देखा। अगर मैं नदी के उस तरफ चली जाऊ तो मुझे और भी ताजा और हरी घास खाने को मिल सकती है। ये सोचकर वो बकरी नदी के दूसरी तरफ जाने लगी। नदी के दूसरी और जाने का मात्र एक ही रास्ता था और वो था एक पतला सा लकड़ी का पुल जिस पर एक बार में सिर्फ एक ही जानवर गुजर सकता था। वो बकरी उस पुल तक गयी और पुल पार करने लगी तो उसने देखा कि पुल के दूसरे किनारे एक और बकरी पहले से ही खड़ी है और वो भी पुल पार करना चाहती है। धीरे धीरे दोनों बकरियां नजदीक आयी और अपने सामने आकर खड़ी हो गयी। पहली बकरी ने दूसरी बकरी से कहा कि पीछे हटो और मुझे पुल पार करने दो। तो दूसरी बकरी बोली कि नहीं पहले मैं आयी थी इस पुल पर। इसलिए पहले मैं जाउंगी। पहली बकरी- नहीं पहले मैं जाउंगी क्योंकि पहले मैं ही इस पुल पर चढ़ी थी। अब पीछे हटो और रास्ता दो। इस प्रकार दोनों बकरियों में से कोई भी पीछे हटने को तैयार नहीं थी। अब वे दोनों बकरियां आपस में ही लड़ने लगी और उनका झगड़ा बढ़ने लगा। लड़ते लड़ते अचानक एक बकरी को अपने दादाजी की सुनाई हुई एक कहानी याद आ गयी जिसमें दो बकरियां इसी तरह लड़ते हुए पुल से नीचे गिर जाती है और पानी में डूबकर मर जाती है। अब वो बकरी दूसरी बकरी से कहती है कि देखो बहन! हम दोनों तो खामखा ही लड़ रही है। इससे हमें कोई फायदा नहीं होने वाला। इसलिए हमें थोड़ा समझदारी से काम लेना चाहिए। ऐसा कहकर वो बकरी वहीं बैठ पर गई और दूसरी बकरी से कहा कि बहन अब तुम मेरे ऊपर से होकर आगे निकल जाओ। दूसरी बकरी ने भी वैसा ही किया और आगे बढ़ गई। इसके बाद पहली बकरी उठी और वो भी अपने रास्ते चल पड़ी। इस प्रकार दोनों बकरियों ने शांति से पुल पार कर लिया और वहां जाकर हरी हरी घास खाने का आनंद लेने लगी।

इस कहानी से शिक्षा: शांति और समझदारी से किसी भी समस्या का समाधान निकाला जा सकता है।

7 अंतर खोजें

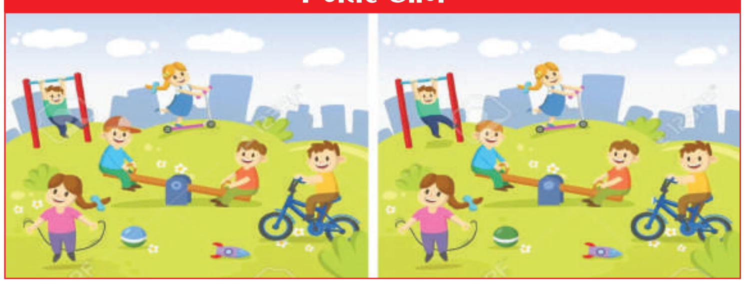

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष

आज का दिन मिला-जुला रहेगा। कारोबार अच्छा चलेगा, लेकिन कार्यभार की अधिकता से तनाव भी बढ़ेगी। कठिन परिश्रम से कार्यों में सफलता मिलेगी और आर्थिक स्थिति मजबूत होगी।

तुला

आज का दिन सामान्य रहेगा। कार्य-व्यवसाय में परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है, जिससे मन बेचैन रहेगा और किसी कार्य को करने में मन नहीं लगेगा। धन की आमद सामान्य रहेगी।

वृषभ

कारोबार अच्छा रहेगा, लेकिन अनावश्यक खर्च भी बढ़ेंगे, जिससे आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। स्वभाव में कठोरता और रुखेपन पर नियंत्रण रखने की जरूरत है, अन्यथा पूरा दिन खराब हो सकता है।

वृश्चिक

आय-व्यय में संतुलन बना रहेगा। कार्यक्षेत्र में मंदी का सामना करना पड़ सकता है। नए कार्यों की शुरुआत कर सकते हैं। नए लोगों से सम्पर्क बढ़ेगा। जमीन-जायदाद संबंधी मामले निपटेंगे।

मिथुन

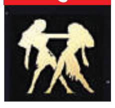

आज का दिन अच्छा रहेगा। आध्यात्मिक और धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी, जिससे समाज में मान-सम्मान मिलेगा। कारोबार और नौकरी में सहयोगियों का पूरा सहयोग मिलेगा। अनावश्यक खर्च की अधिकता रहेगी।

धनु

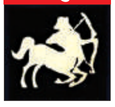

आज का दिन अच्छा रहेगा। परिश्रम से सभी कामों में सफलता मिलेगी और बिगड़े हुए काम बन सकते हैं। कारोबार में आर्थिक लाभ और नौकरी में तरक्की के योग रहेंगे, लेकिन खर्च की अधिकता से चिंता बढ़ जाएगी।

कर्क

कारोबार में उतार-चढ़ाव रहेगा और व्यर्थ के कामों में अधिक समय खराब हो सकता है। बुजुर्गों की सलाह लेकर काम करेंगे, तो सफलता के साथ ज्यादा लाभ के अवसर मिलेंगे। लेन-देन से बचना होगा।

मकर

मेहनत के बेहतर परिणाम सामने आएंगे। शरीर में नया जोश और उत्साह देखने को मिलेगा और सभी कार्य आसानी से पूरा करेंगे। रुके हुए काम भी पूरे हो सकते हैं। प्रॉपर्टी में निवेश फायदेमंद रहेगा।

सिंह

कारोबार में अच्छा लाभ मिलने की संभावना है। कठिन परिश्रम से अच्छे व अनुकूल परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। कार्य स्थल पर सहकर्मियों का पूरा सहयोग मिलेगा।

कुम्भ

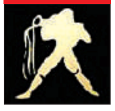

आज का दिन सामान्य रहेगा। कठिन परिश्रम के बावजूद कार्यों में आशानुरूप सफलता नहीं मिलेगी, जिससे मन उदास रह सकता है। स्वास्थ्य एवं अन्य घरेलू समस्याओं का सामना भी करना पड़ सकता है।

कन्या

कार्यक्षेत्र में परिश्रम से धनलाभ के अवसर सुलभ होंगे। मन में उत्साह और शरीर में नई ऊर्जा का अनुभव करेंगे। अनैतिक रूप से धन कमाने के प्रयास लाभ तो देंगे, लेकिन बाद में समस्या खड़ी कर सकते हैं।

मीन

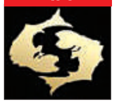

कारोबार में मुनाफा रहेगा। आकस्मिक धनलाभ के योग रहेंगे। कार्यभार की अधिकता रहेगी और मेहनत का प्रतिफल भी प्राप्त होगा। जल्दबाजी में कोई निर्णय लेने बचें, वरना मौका हाथ से निकल सकता है।

यूपी से पंजाब तक कांग्रेस में घमासान

कांग्रेस की पोस्टर गर्ल प्रियंका मौर्या बोलीं, पार्टी में चल रही है धांधली

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के विधान सभा चुनाव में कांग्रेस के 403 सीट में 40 प्रतिशत महिलाओं को टिकट के देने की घोषणा में पार्टी की पोस्टर गर्ल ने ही धांधली का आरोप लगाया है। कांग्रेस के लड़की हूं, लड़ सकती हूं पोस्टर में सबसे आगे रहने वाली डा. प्रियंका मौर्या ने आरोप लगाया है कि पार्टी में धांधली हो रही है। वहीं पंजाब में पांच सीटों पर प्रत्याशियों के नामों के चयन को लेकर सहमति नहीं बनी। इसके कारण फाइनल लिस्ट लटक गयी है।

» प्रियंका गांधी के सचिव पर लगाया बेहद गंभीर आरोप

» पंजाब में पांच सीटों को लेकर नहीं बनी सहमति

लखनऊ से सरोजनी नगर से टिकट का दावा कर रही लड़की हूं लड़ सकती हूं कैंपेन की पोस्टर गर्ल डा.प्रियंका मौर्या ने पार्टी के सचिव संदीप सिंह पर धांधली का आरोप लगाया है। प्रियंका के अनुसार पार्टी ने उनके साथ धोखा किया है। महिला कांग्रेस की मध्य जोन की उपाध्यक्ष प्रियंका मौर्या ने कहा है कि मेरे नाम का इस्तेमाल किया गया। यह पार्टी महिला विरोधी है। उन्होंने कहा कि यहां पर तो सारे टिकट पहले से तय थे। सिर्फ दिखावे के लिए स्क्रीनिंग की जा रही है। हमसे कहा गया कि टिकट चाहिए तो मैराथन के लिए लड़कियां लाइये। मैराथन में लड़कियों के साथ बहुत बुरा सुलूक किया गया। लखनऊ की सरोजनीनगर विधान सभा सीट से उनका टिकट काटकर रुद्र दमन सिंह को दे दिया गया। सूची जारी होने के कुछ घंटे बाद ही प्रियंका मौर्या ने अपने ट्विटर हैंडल से ट्वीट करके कांग्रेस पार्टी में टिकटों की सौदेबाजी का आरोप लगाया। उन्होंने लिखा है कि प्रियंका गांधी के सचिव संदीप सिंह ने उनसे टिकट के एवज में रुपये के लिए किसी से फोन करवाया था। रुपए न देने पर उनकी जगह किसी और के नाम की घोषणा कर दी। पार्टी प्रवक्ता अशोक सिंह का कहना है कि टिकट न मिलने की वजह से झूठा आरोप लगाया जा रहा है। वहीं पंजाब में कांग्रेस पार्टी में टिकट बंटवारे को लेकर घमासान जारी है। शुक्रवार को देर रात तक टिकटों की पहली सूची को अंतिम रूप देने के लिए मंथन होता रहा लेकिन पांच नामों पर सहमति नहीं बनने के कारण सूची को दो दिन के लिए और टाल दिया गया है। सोनिया गांधी ने साफ कर दिया है कि जब तक विवाद शांत नहीं हो जाता तब तक सूची जारी नहीं की जाएगी। केंद्रीय चुनाव समिति में पांच सीटों पर विवाद हो रहा है।

माध्यमिक स्कूलों में होंगी लिखित और प्रायोगिक परीक्षाएं

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। प्रदेशभर में कोरोना संक्रमितों की संख्या में तेजी से बढ़ोतरी होने की वजह से विद्यालय बंद हैं। इस दौरान स्कूलों में लिखित व प्रायोगिक परीक्षाएं पहले से निर्धारित रही हैं। माध्यमिक शिक्षा विभाग ने लिखित व प्रायोगिक परीक्षाएं कराने की अब सशर्त अनुमति दी है।

अपर मुख्य सचिव माध्यमिक शिक्षा आराधना शुक्ला ने जिला विद्यालय निरीक्षकों को भेजे आदेश में लिखा है कि पांच व नौ जनवरी को शासन ने कोरोना संक्रमण की वजह से सभी विद्यालयों को 16 जनवरी तक बंद रखने का निर्देश दिया था, वहीं 11 जनवरी को जारी आदेश में शासन ने लिखित व प्रायोगिक परीक्षाओं के लिए छात्र-छात्राओं को विद्यालय आने की छूट दी गई है। ऐसे में जिन माध्यमिक विद्यालयों में पहले से निर्धारित लिखित व प्रायोगिक परीक्षाएं कराया जाना अनिवार्य हैं उन्हें प्रतिबंधों के साथ अनुमति दी गई है। इसके लिए कोरोना प्रोटोकॉल के पालन के निर्देश दिए गए हैं।

प्रदेश में कोरोना की रफ्तार बढ़ी, चौबीस घंटे में सोलह हजार से अधिक संक्रमित

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। अब प्रदेश में भी कोरोना ने रफ्तार पकड़ ली है। शुक्रवार को कोरोना से संक्रमित 16016 नए रोगी मिले जबकि गुरुवार को 14675 मरीज मिले थे। ऐसे में मरीजों की संख्या में बीते 24 घंटे में 13.4 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। सबसे ज्यादा 2209 नए मरीज लखनऊ में मिले हैं।

अपर मुख्य सचिव, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अमित मोहन प्रसाद ने बताया कि बीते 24 घंटे में 2.54 लाख लोगों की कोरोना जांच की गई। अब तक कुल 9.58 करोड़ लोगों का कोरोना टेस्ट किया जा चुका है। पाजिटिविटी रेट 6.30 प्रतिशत हो गई है। गुरुवार को यह 5.74 प्रतिशत थी यानि इसमें 0.54 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। जनवरी के पहले हफ्ते के मुकाबले अब यह कम रफ्तार से बढ़ रही है। इस समय कोरोना के कुल 84440 मरीजों में से 82412 रोगी होम आइसोलेशन में हैं यानि 97.5 प्रतिशत मरीज घर पर रहकर अपना इलाज करा रहे हैं। तीन रोगियों की कोरोना से मौत हुई है। इसमें मेरठ के दो और गौतम बुद्ध नगर का एक मरीज शामिल है। गाजियाबाद में 1887, गौतम बुद्ध नगर में 1817, मेरठ में 1203, आगरा में 781 और वाराणसी में 666 नए रोगी मिले हैं। अब सक्रिय केस बढ़कर 84440 गए हैं। यूपी में छह मार्च 2020 को कोरोना संक्रमण ने दस्तक दी थी। करीब 22 महीने में कोरोना से कुल 18.01 लाख लोग संक्रमित हो चुके हैं। हालांकि इसमें से 16.93 लाख रोगी स्वस्थ हो चुके हैं। रिकवरी रेट 94 प्रतिशत है।

2209 नए मरीज मिले लखनऊ में तीन की मौत

» एक दिन में 13.4 प्रतिशत दर्ज की गयी बढ़ोतरी

पर्यावरण प्रेमियों ने कर्मनाशा में डुबकी लगाकर तोड़ा मिथक

» जीवनदायिनी कर्मनाशा नदी को नहीं कहा जा सकता शापित: निलय

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

दिल्ली। मकर संक्रांति पर्व पर कर्मनाशा नदी में डुबकी लगाकर इस मिथक को तोड़ा गया कि इस नदी में स्नान से व्यक्ति के सारे कर्म नष्ट हो जाते हैं। उत्तर प्रदेश के सोनभद्र जिले में नल दमयंती घाट पर निलय उपाध्याय, विजय शंकर चतुर्वेदी व विजय विनीत ने स्नान कर मिथक तोड़ने का कार्य किया।

निलय उपाध्याय ने कहा कि जो नदी जीवनदायिनी है उसे शापित कहा ही नहीं जा सकता। किसी भी पुराण में इस मिथक से संबंधित कोई भी उल्लेख नहीं है। यह सिर्फ एक मिथक है। यथार्थ नहीं बदलता, समय और भाषा बदलती है। आज हम सब हजारों वर्ष की विडंबना को छोड़कर नए यथार्थ की भूमि पर खड़े हैं। अब इस यज्ञ के बाद कर्मनाशा शापित नहीं रही। पर्यावरण पर कार्य कर रहे वरिष्ठ पत्रकार विजय शंकर चतुर्वेदी ने कहा कि जीवन देने वाली नदी या पंचतत्व की जल प्रतिनिधि को कौन शापित कर सकता है? यह कार्य विंध्य क्षेत्र का सांस्कृतिक नवजागरण है। विजय विनीत ने कहा कि सम्पूर्ण विंध्य क्षेत्र के अन्नपूर्णा बनी इस नदी को अभिशप्त कैसे कह जा सकता है। नगवा बांध से कर्मनाशा का जल धनरौल बांध में आता है जिससे सिर्फ सोनभद्र ही नहीं मिर्जापुर जिले में भी सिंचाई होती है। चन्दौली जिले में कर्मनाशा पर बने बांध उस जिले की हरीतिमा का मुख्य आधार हैं, फिर हम इसको शापित कैसे कह सकते हैं। इस मौके पर सनोज तिवारी, पूर्व क्षेत्र प्रमुख प्रवीण सिंह, सुमित शाह, श्यामसुंदर पांडेय, विनय पांडेय, बसंत कुमार सिंह, बमबम सिंह, परमा गुप्ता, विरेन्द्र दुबे, रामसूरत गुप्ता, अवधेश पटेल व सुनील सिंह राजेश सोनी, शिव नरायन प्रजापति आदि मौजूद रहे।

गणतंत्र दिवस के मौके पर दुबई में कवि सम्मेलन और मुशायरा

» नामचीन कवि और शायर पेश करेंगे रचनाएं

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दुबई के शेख राशिद ऑडिटोरियम में 22 जनवरी को आजादी का अमृत महोत्सव और गणतंत्र दिवस के मौके पर कवि सम्मेलन और मुशायरे का आयोजन किया जाएगा। हिन्दी और उर्दू की नामचीन हस्तियां इसमें भाग लेंगी।

कार्यक्रम के आयोजक सैयद सलाहुद्दीन ने बताया कि भारत के राजदूत संजय सुधीर ने स्मारिका लेखन के लिए एक संदेश भेजा। इसमें लिखा गया है कि मैं कवि सम्मेलन और मुशायरा, दुबई की आयोजन समिति और इसके संस्थापक सैयद सलाहुद्दीन के प्रयासों की सराहना करता हूं। न्यायमूर्ति मोहम्मद बाबर मुख्य अतिथि होंगे जबकि प्रो. डॉ. तारिक सईद कार्यक्रम की अध्यक्षता करेंगे। जौहर कानपुरी, डॉ. अखिलेश मिश्रा (आईएएस), डॉ. सुमन दुबे, डॉ. नय्यर जलालपुरी, हाशिम फिरोजाबादी, शंभू शिखर, डॉ. राकेश तूफान और एकता भारती कवि सम्मेलन और मुशायरे की शान होंगे। डॉ. नैयर जलालपुरी, विभागाध्यक्ष, उर्दू, लखनऊ युनिवर्सिटी, कार्यक्रम का संचालन करेंगे। इसके अलावा, अमीराती डॉ. ज़ुबैर फारूक शाम का मुख्य आकर्षण होंगे। कवियों की नवीनतम कविता स्मारिका में शामिल है।

तो यूपी में सीएम चेहरा बदल सकती है भाजपा!

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। यूपी में चुनावी तापमान लगातार बढ़ता जा रहा है। भाजपा के कई बागी विधायक व मंत्रियों ने सपा की सदस्यता ले ली है। इससे भाजपा में बहुत बेचैनी है। योगी के बागी तेवर और अहंकार ने भाजपा को घुटनों पर ला दिया है। अचानक केशव प्रसाद मौर्य मुख्य धारा में शामिल हो गए हैं। क्या भाजपा किसी पिछड़ी जाति के चेहरे को मुख्यमंत्री के तौर पर पेश करेगी या योगी को सीएम चेहरा बनाए बिना चुनाव में उतरेगी? ऐसे कई सवाल उठे वरिष्ठ पत्रकार श्रवण गर्ग, उमाकांत लखेड़ा, ममता त्रिपाठी, उमाशंकर दुबे, अजय शुक्ला, दीपक शर्मा, अभिषेक कुमार और 4पीएम के संपादक संजय शर्मा के बीच चली लंबी परिचर्चा में।

» योगी की कार्यशैली से परेशान रहे मंत्री और विधायक

» 4पीएम की परिचर्चा में उठे कई सवाल

ममता त्रिपाठी ने कहा, जिस तरह योगी आदित्यनाथ सरकार चला रहे थे, यही होना था। इसके पहले भी उनके विधायक धरने पर बैठ थे। मंत्रियों के विभाग के फैसले खुद सीएम योगी लेते थे। अभी तो असली पिक्चर बाकी है। हालांकि अब भाजपा योगी को हटाएगी नहीं। उमाकांत लखेड़ा ने कहा, पिछले चुनाव में भाजपा को लगा कि हिंदुत्व के नाम पर जातिवाद प्रदेश से खत्म हो गया है लेकिन ऐसा हुआ नहीं है। पिछड़े और दलितों के बीच काफी गुस्सा है। इसका खामियाजा भाजपा को भुगतना पड़ेगा। अजय शुक्ला ने कहा, अखिलेश को जनता को यकीन दिलाने की जरूरत है कि वे अच्छे नेता साबित होंगे। पिछले बार उन पर जो आरोप लगते रहे हैं उससे वे बाहर निकलने की कोशिश करें। दीपक शर्मा ने कहा, योगी कहने से कोई उपयोगी नहीं होता है। मंत्री और विधायकों की सुनी नहीं गयी। सीएम योगी उनके कई निर्णयों को नकारा दिया। श्रवण गर्ग ने कहा, भाजपा के ब्रांड मोदी है और उनके नाम पर वोट मिलता है। चुनाव के बाद योगी के बारे क्या होता है यह देखना होगा। अभिषेक कुमार ने कहा, योगी पूरी तरह प्रजातांत्रिक है लेकिन केंद्र से आदेश दिया गया था कि उन्हें किसी की नहीं सुननी है। यह आदेश ही योगी के पर कतरने की शुरुआत मानी जा सकती है।

जयशंकर दुबे ने कहा कि वे अधिकांश मठ पर रहते है। उनका नेतृत्व अलग रहा है। जब नाराज होते है तो मठ में बैठ जाते हैं। उनका व्यक्तित्व दबंगई वाला है।

परिचर्चा
रोज शाम को छह बजे देखिए 4PM News Network पर एक ज्वलंत विषय पर चर्चा

किसानों के नेता ने योगी सरकार पर साधा निशाना

जो किसानों के साथ खड़ा है, मैं उसी के साथ : टिकैत

» 13 माह तक लाठी खाई है कुछ भूले नहीं हैं किसान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। भारतीय किसान यूनियन (भाकियू) के राष्ट्रीय प्रवक्ता राकेश टिकैत ने कहा कि वह किसी भी राजनीतिक पार्टी का समर्थन नहीं करते हैं। भारतीय किसान यूनियन किसानों के हित व किसानों की लड़ाई लड़ती रहेगी। जब भी सरकार तानाशाही करेगी। देशभर का किसान तानाशाही को बर्दाश्त नहीं करेगा।

किसान आंदोलन भले ही खत्म हो चुका हो, लेकिन राकेश टिकैत ने बेबाकी से कहा कि जो किसानों के साथ हैं, किसान उसके साथ हैं। 28 जनवरी 2021 की रात को उन्होंने काली रात बताया। कहा कि सरकार की मंशा कत्लेआम मचाने की थी। राकेश टिकैत ने कहा कि जनता व किसान कुछ नहीं भूले। हमें सब याद है। इस देश की जनता को सब कुछ याद है। कोरोना कॉल में गंगा में लाशें बहाई गईं वह भी याद हैं। किसान, गरीब, मजदूर वर्ग पर सरकार ने कोरोना काल में खूब अत्याचार किए। शामली की गाड़ी पीएम मोदी की रैली में 800 किमी दूर बनारस गईं। लॉक डाउन में तो वह गाड़ी मजदूरों को घर पहुंचाने के लिए नहीं लगाईं। सीएम व पीएम की रैली के लिए बसें जा सकती हैं जनता के लिए नहीं। राकेश टिकैत ने योगी सरकार पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि लॉकडाउन में जब मजदूर अपने घर जाने के लिए सड़क पर निकले तो भूख प्यास का सामना करना पड़ा। सुबह से शाम तक पैदल चलते और पुलिस लाठियों से पीटती। सब कुछ याद है, चुनाव में लोग सरकार के अत्याचार को याद रखेंगे। भारतीय किसान यूनियन एक गैर राजनीतिक दल है। कोई भी पार्टी चुनाव लड़े, इससे हमारा कोई लेना देना नहीं है। किसान ने घर छोड़कर 13 माह तक लाठी खाई हैं, 700 लोगों की जान चली गई। किसान सरकार की तानाशाही को नहीं भूलेंगे। हम पूरी तरह से चुनाव से दूर हैं। चुनाव लड़ना अधिकार है।

टिकट न मिलने से नाराज भाजपा प्रत्याशी के समर्थकों ने जलाया पार्टी का झंडा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। अलीगढ़ की सात में छह विधानसभा सीटों पर भाजपा ने प्रत्याशियों के नाम घोषित कर दिए। इससे एक ओर जहां इनके समर्थकों में खुशी की लहर है तो दूसरी ओर एक ऐसा भी धड़ा है जो अपने चहेते को टिकट न मिलने से नाराज हो गया। नाराजगी ऐसी बढ़ी की पार्टी का झंडा जलाकर बीजेपी मुर्दाबाद के नारे लगाने लगे।

बता दें कि शनिवार को अलीगढ़ की सात विधानसभा सीटों में से छह सीट पर भाजपा ने अपने प्रत्याशियों के नाम की घोषणा कर दी। इसमें टिकट की दावेदारी में शामिल रहे एक प्रत्याशी को टिकट नहीं मिला तो उनके समर्थक नाराज हो गए। उनकी नाराजगी इस कदर बढ़ी कि उन्होंने

पार्टी का झंडा जलाकर मुर्दाबाद के नारे लगाए। इस घटना का वीडियो भी इंटरनेट मीडिया पर जारी हो गया। वीडियो वायरल होने के बाद पार्टी में हड़कंप मच गया। बताया जाता है कि इस कार्य को रामघाट रोड स्थित डीपीएस स्कूल के पास एक भाजपा कार्यकर्ता के कार्यालय में अंजाम दिया गया। झंडा जलाने वाला कार्यकर्ता गोधा मंडल का वरिष्ठ पदाधिकारी बताया जाता है।

कानपुर में बीजेपी में नहीं कटेगा किसी का टिकट!

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। यूपी में विधानसभा चुनाव की तारीखों का एलान हो चुका है। राजनीतिक पार्टियां चुनाव जीतने के लिए एड़ी की चोटी जोर लगा रही है। ऐसे में बीजेपी से 14 विधायक और मंत्रियों के सपा में शामिल होने से पूरी तरह से बीजेपी बैकफुट पर आती दिखाई दे रही है।

वहीं अब कानपुर व कानपुर देहात में किसी भी विधायक का टिकट नहीं कटेगा। साथ ही टिकट रिपीट होगी। प्रदेश स्तर से प्रत्याशियों के नाम फाइलन करके लिस्ट भाजपा की केंद्रीय चुनाव कमेटी को भेज दिया गया है। भारतीय जनता पार्टी ने प्रदेश स्तर के साथ ही केंद्रीय स्तर की टीमों से सभी विधानसभा का एक गोपनीय सर्वे कराया था। इसमें कई विधायकों का फीडबैक बहुत खराब मिला था।

भाजपा प्रत्याशियों की लिस्ट

विधानसभा गोरखपुर शहर से योगी आदित्यनाथ, मथुरा से श्रीकांत शर्मा, आगरा ग्रामीण से बेबीरानी मौर्य, सिराथू से केशव प्रसाद मौर्य, कैराना से मृगांका सिंह, थाना भवन से सुरेश राणा, शामिली से तेजिंदर सिंह, मीरपुर से प्रशांत गुर्जर, बुढ़ाना से उमेश मालिक, मुजफ्फरनगर से कपिल देव अग्रवाल, चरथावल से सपना कश्यप, सरधना से संगीत सोम, हस्तिनापुर से दिनेश खटीक, किठौर से सत्यवीर त्यागी, मेरठ साउथ से सोमेंद्र तोमर, बड़ौत से केपी सिंह मालिक, लोनी से नंद किशोर गुर्जर, साहिबाबाद से सुनील शर्मा, गाजियाबाद से अतुल गर्ग, मोदी नगर से मंजू, हापुड़ से विजयपाल, गढ़मुक्तेश्वर से हरेंद्र चौधरी, नोएडा से पंकज सिंह, दादरी तेजपाल नागर, जेवर धीरेंद्र सिंह, सिकंदराबाद लक्ष्मी राज सिंह, स्याना देवेंद्र सिंह लोधी, अनूपशहर संजय शर्मा, डिबाई सीपी सिंह, शिकारपुर अनिल शर्मा, खुर्जा मीनाक्षी सिंह, खैर अनूप प्रधान वाल्मीकि, बरौला ठाकुर जयवीर सिंह, अतरौली संदीप सिंह, छर्रा रविन्द्र पाल सिंह, कोल अनिल पराशर, इगलास राजकुमार सहयोगी, छाता लक्ष्मी नारायण चौधरी, मथुरा श्रीकांत शर्मा, बलदेव पुरान प्रकाश, गोवेर्धन मेघश्याम, मांट राजेश चौधरी, आगरा ग्रामीण बेबी रानी मौर्य, फतेहपुर सीकरी चौधरी बाबूलाल, खेरागढ़ भगवान सिंह कुशवाहा, बाह रानी पक्षालिका, बेहट नरेश सैनी। दूसरे चरण के प्रत्याशियों की लिस्ट में सहारनपुर नगर राजीव गुम्बर, सहारनपुर जगपाल सिंह, देवबंद बृजेश सिंह, रामपुर मनिहारान देवेंद्र, गंगोह कीरत सिंह गुर्जर, नागीना यशवंत, चांदपुर कमलेश सैनी, मुरादाबाद देहात कृष्ण कांत मिश्रा, चंदौसी गुलाबो देवी, असमैली हरेंद्र सिंह रिंकू, बिलासपुर बलदेव सिंह औलख, धनौरा राजीव तरारा, बरेली डॉ अरूण सक्सेना, नौगांव देवेंद्र नागपाल, हसनपुर महेन्द्र सिंह खडागबंशी, बिल्सी हरीश शाक्य, बदायूं महेश गुप्ता, दातागंज राजीव सिंह, आंवला धर्मपाल सिंह, शाहजहांपुर सुरेश खन्ना, वाया चेतराम पासी, कटरा वीर विक्रम सिंह, फरीदपुर से श्याम बिहारी लाल सहित और कई नाम शामिल हैं।

बसपा प्रत्याशियों की लिस्ट

विधान सभा क्षेत्र कैराना राजेंद्र सिंह उपाध्याय, शामली ब्रिजेंद्र मलिक, बुढ़ाना हाजी मोहम्मद अनीश, चरथावल सलमान सईद, पुरकाजी एससी सुरेंद्र पाल सिंह, मुजफ्फरनगर पुष्पाकर पाल, खतौली माजिद सिद्दीकी, मीरापुर मोहम्मद शालिम, सिवालखास मुकर्रम अली, सरधना संजीव कुमार धामा, हस्तिनापुर एससी संजीव कुमार जाटव, किठौर कुशल पाल, मेरठ कैंट अमित शर्मा, मेरठ दक्षिण दिलशाद अली, छपरौली शाहिन चौधरी, बड़ौत अंकित शर्मा, लोनी आकिल चौधरी, गढ़मुक्तेश्वर मो. आरिफ, नोएडा कृपाराम शर्मा, दादरी मनवीर सिंह, जेवर नरेंद्र भाटी, सिकन्दराबाद मनवीर सिंह, स्याना सुनील भारद्वाज, अनूपशहर रामेश्वर सिंह, डिबाई करनपाल सिंह, शिकारपुर मो. रफीक, खुर्जा एससी विनोद कुमार जाटव, खैर एससी प्रेमपाल सिंह, बरौली नरेंद्र शर्मा, अतरौली डॉ. ओमवीर सिंह, छर्रा तिलक राज यादव, कोल मो. बिलाल, अलीगढ़ रजिया खान, इगलास एससी सुशील कुमार, छाता सोनपाल सिंह, मांट श्याम सुंदर शर्मा, गोवर्धन राजकुमार रावत, आगरा कैंट भारतेंद्र अरूण, आगरा दक्षिणी रवि भारद्वाज, आगरा उत्तरी मुराली लाल गोयल, आगरा देहात एससी किरन प्रभा, फतेहपुर सीकरी डॉ मुकेश कुमार, खेरागढ़ गंगाधर सिंह, फतेहाबाद शैलेंद्र प्रताप सिंह, बाह से नितिन वर्मा को बसपा ने प्रत्याशी बनाया है।

उत्तराखंड में आप की तीसरी लिस्ट जारी

देहरादून। आम आदमी पार्टी ने आगामी विधानसभा चुनाव के मद्देनजर प्रत्याशियों की तीसरी लिस्ट भी जारी कर दी है। जिसमें गढ़वाल से पांच और कुमाऊं से चार प्रत्याशियों के नामों का एलान किया गया है। आप के प्रदेश प्रभारी दिनेश मोहनिया ने ट्वीट करके यह जानकारी दी है। उन्होंने कहा है कि आम आदमी पार्टी अन्य सभी दलों से प्रत्याशी घोषित करने में सबसे आगे निकल चुकी है। पार्टी अब तक कुल 51 प्रत्याशियों के नामों का एलान कर चुकी है, जिनमें से नौ प्रत्याशियों की घोषणा आज आप पार्टी द्वारा की गई है। इसमें पुरोला से प्रकाश कुमार, देवप्रयाग से उत्तम भंडारी, सहसपुर से भरत सिंह, मसूरी से श्याम बोरा, झबरेड़ा से राजू बिराटिया, डीडीहाट से दीवान सिंह मेहता, लाल कुआं से चंद्रशेखर पांडे, नानकमत्ता से आनंद सिंह राणा और खटीमा से पूर्व प्रदेश अध्यक्ष एसएस कलेर को प्रत्याशी घोषित किया है। उन्होंने कहा कि अन्य बचे 19 नामों की घोषणा भी आम आदमी पार्टी द्वारा जल्दी कर दी जाएगी। ताकि सभी प्रत्याशियों को जनता के बीच जाने का पूरा मौका मिल सके और जनता भी अपने प्रत्याशियों के बारे में जान सके। उन्होंने सभी नौ प्रत्याशियों को शुभकामनाएं देते हुए आगामी चुनाव के लिए डटकर तैयारी करने के निर्देश भी दिए हैं।

टेंशन में बीजेपी : रायबरेली सदर सीट पर अदिति सिंह को टक्कर देंगी उनकी भाभी आरती सिंह!

» अपने ही परिवार से होगा अदिति सिंह का सामना

» पूर्व सांसद चाचा की बहू को टिकट दे सकती है कांग्रेस

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सोनिया गांधी के संसदीय क्षेत्र रायबरेली की सदर विधानसभा सीट पर मुकाबला दिलचस्प होने वाला है। यहां कांग्रेस से भाजपा में आईं विधायक अदिति सिंह पार्टी की प्रत्याशी होंगी। वहीं कांग्रेस ने अदिति के मुकाबले पर उनके परिवार का ही उम्मीदवार उतारने का मन बनाया है।

चर्चा है कि कांग्रेस अदिति सिंह के चाचा पूर्व सांसद स्व. अशोक सिंह की पुत्र वधू आरती सिंह को मैदान में उतार सकती है। ऐसे में अदिति की राह आसान

नहीं होगी। आरती सिंह हाल ही में संपन्न हुए जिला पंचायत अध्यक्ष चुनाव में कांग्रेस के सिंबल से अध्यक्ष पद के लिए चुनाव भी लड़ चुकी हैं और वो वर्तमान में जिला पंचायत सदस्य भी हैं।

अगर कांग्रेस सदर सीट से पूर्व सांसद स्व. अशोक सिंह की बहू आरती सिंह को प्रत्याशी बनाती है तो अदिति सिंह जो कांग्रेस छोड़ अब भाजपा में शामिल हो गई हैं, उनके लिए कड़ी चुनौती रहेगी। क्योंकि एक परिवार से दो लोगों का सामने आना चुनौती के रूप में दिखाई दे रहा है। पूर्व सांसद अशोक सिंह के बेटे मनीष सिंह भी कांग्रेस के नेता हैं। लंबे समय से कांग्रेस में रहकर उनकी पब्लिक में अच्छी पकड़ मानी जाती है। अदिति सिंह के पिता स्व. अखिलेश सिंह सदर सीट से 5 बार विधायक रह चुके थे। उनके सामने कोई भी नेता टिक नहीं पाता था।

अखिलेश सिंह निर्दलीय, पीस पार्टी अन्य कई दलों से चुनाव लड़कर विधायक बने थे। अखिलेश सिंह को लोग गरीबों का मसीहा कहते थे। लंबी बीमारी के चलते अखिलेश सिंह का निधन हो चुका है। उनके न रहने पर यह पहला चुनाव है, जो अदिति सिंह अपने दम पर लड़ने जा रही हैं। फिलहाल अब तक लोग अखिलेश सिंह के नाम से ही अदिति सिंह के साथ तन-मन से लगे हुए दिखाई दे रहे हैं।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक **बबिता चतुर्वेदी** के लिए **4पीएम** आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ (यूपी) से मुद्रित एवं प्रकाशित। **प्रधान संपादक**- अर्चना दयाल, **संपादक** - संजय शर्मा, **स्थानीय संपादक** - सूर्यकांत त्रिपाठी*, **विधि सलाहकार**: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, **वित्तीय सलाहकार**: संदीप बंसल, **कार्टूनिस्ट**: हसन जैदी, **दूरभाष**: 0522- 4078371 | **Email**: daily4pm@gmail.com | **website:** www.4pm.co.in | **RNI-UPHIN/2015/62233** डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।